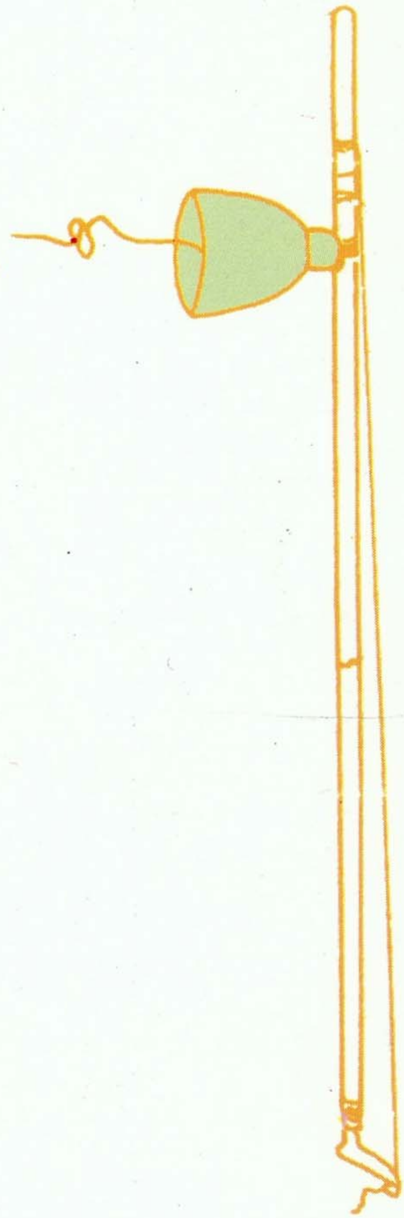
मुण्डाकोअः नुतुम कहानिको ओड़ोः होनकोअः इनुङ दुरङको

मुण्डाओं की पहेलियां और बच्चों के खेल गीत





डॉ० मनसिद्ध बड़ायऊद्

मुण्डाकोअः नुतुम कहानिको
ओड़ोः
होनकोअः इनुङ दुरङको

डॉ० मनसिद्ध बड़ायऊद्

गोनोङ : 20.00 टका

मुद्रक : काथलिक प्रेस राँची - 834001, ☎(0651) 2350417
E-mail : catholic_press@yahoo.in

विषय-सूची

(नुतुम कहानिको)

(होनकोअः इनुङ दुरङको)

भूमिका

(नुतुम कहानिको)

मुण्डारी की "नुतुम कहानियों" के संकलन का कार्य नि:संदेह मुण्डारी साहित्य के पूर्ववर्त्ती विद्वानों ने किया है । इन विद्वानों में फॉ० जॉन बपतिस्त हॉफमन एस० जे० और डब्लू० जी० अर्चर का नाम बखूबी लिया जा सकता है । फॉ० जॉन बपतिस्त हॉफमन एस० जे० ने मुण्डारी विश्वकोष ENCYCLOPEDEA MUNDARICA में और डब्लू० जी० अर्चर ने अपनी पुस्तक "मुण्डा दुरङ" में इनको संकलित किया है। उन्हीं के प्रयास का यह परिणाम है कि आज हम मुण्डारी की "नुतुम कहानियों" को देख पा रहे हैं। लेकिन इन्होंने "नुतुम कहानियों" पर एक पृथक पुस्तक लिखने का कार्य नहीं किया।

यह देखकर मुझे लगा क्यों न उनके इस अधूरे कार्य को पूरा किया जाय । यही सोचकर मैंने प्रस्तुत पुस्तक "मुण्डाकोअ: नुतुम कहानिको" लिखने का बीड़ा उठाया। इस पुस्तक की आधार सामग्री मूल रूप से पूर्ववर्त्ती विद्वांनों के द्वारा संकलित नुतुम कहानियाँ ही हैं । सामग्री जुटाने में परवर्ती विद्वानों का योगदान इसमें अत्याल्प है । परवर्ती विद्वानों में तो शायद ही किसी का किंचित ध्यान मुण्डारी की "नुतुम कहानियों" को संकलित करने की ओर कभी गया होगा । अगर गया होता तो प्रस्तुत पुस्तक में नुतुम कहानियों की एक बड़ी संख्या दिखाई देती ।

पुस्तक लिखने का मेरा दूसरा उद्देश्य नित्य लुप्त होती जा रही नुतुम कहानियों को संरक्षित करना है ताकि नुतुम कहानियाँ जो हमें पूर्वजों से विरासत में मिली हैं विस्मृति के गर्भ में खो न जायें। आज टीवी के आने से नुतुम कहानियाँ थम सी गई हैं । नुतुम कहानियों को सुनने के लिए बच्चों के पास न तो फुर्सत है और न तो उत्सुकता ही रह गई है । नुतुम कहानियों की स्थिति आज समाज में ठीक वैसे ही बन गई है जैसे मिल में उत्पादित कपड़ों के आने से बुनकरों के द्वारा बुने हुए कपड़ों की हो गई है । आज समाज में टीवी की माँग है नुतुम कहानियों की नहीं । नुतुम कहानियाँ मिटने के कगार पर खड़ी हैं। उनको मिटने से बचाने के लिए पुस्तकों में लिपिबध करने के सिवाय कोई विकल्प नहीं है।

प्रस्तुत पुस्तक में मुण्डारी की नुतुम कहानियों को हिन्दी में अनूदीत किया गया है ताकि जो अपनी मातृभाषा मुण्डारी भूल चुके हैं वे भी इनसे लभान्वित हो

सकें। नुतुम कहानियों का अनुवाद करना दुरुह ही नहीं यह दुरुहत्तर कार्य है क्योंकि उनकी मौलकता को यथावत कायम रखना लाजमी होता है। ऐसा नहीं करने पर नुतुम कहानियों की भवात्मक एवं कलात्मक सुन्दरता खत्म होने का अंदेसा रहता है। इसलिए अनुवाद के कार्य में काफी सतर्कता बरतनी पड़ती है। यथासम्भव इस कार्य में पूरी सावधानी रखी गई है। पाठकों की सहुलियत के लिए नुतुम कहानियों का मुण्डारी और हिन्दी दोनों में अर्थ दिया गया है।

(होनकोअः इनुङ दुरंङको)

बाल खेल गीत मुण्डारी लोक साहित्य की अमूल्य निधि है। इन गीतों का संरक्षण और संवद्र्धन किया जाना अपेक्षित है अन्यथा ये लुप्त हो जायेंगे। इनको विलुप्त होने से बचाने के लिए पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ इनका संकलित किया जाना अति आवश्यक है। इसके सिवाय कोई विकल्प नहीं है। पूर्व के दिनों में इन गीतों को संकलित करने का ध्यान किसी भी विद्वान का नहीं गया सिवाय विदेशी मिशनरियों के। विदेशी मिशनरियों में भी अकेले फॉ० जॉन बपतिस्त हॉफमन, एस०जे० का ही नाम लिया जा सकता है। फॉ० जॉन बपतिस्त हॉफमन, एस०जे० ने Encyclopedia Mundarica में अनेक बाल खेल गीतों को संकलित किया है। Encyclopedia Mundarica के विविध खण्डों में इनको देखा जा सकता है। फॉ० जॉन बपतिस्त हॉफमन, एस०जे० की Encyclopedia Mundarica के अलावे किसी अन्य विद्वान की पुस्तक में मुण्डारी के इन बाल खेल गीतों का संग्रह नहीं मिलता है।

लोक गीतों के संग्रहकत्ताओं का ध्यान भी बाल खेल गीतों की ओर नहीं गया। डब्लू०जी०अर्चर महोदय ने मुण्डारी में लोक गीतों के संकलन का अतुलनीय कार्य किया है। इनकी पुस्तक "मुण्डा दुरङ" में 1641 लोक गीत संकलित हैं। दूसरे विद्वान जगदीश त्रिगुणायत जी हैं। इनकी पुस्तक "बांसुरी बज रही है" में कुल 357 गीत हैं। पर अफसोस की बात तो यही है कि दोनों ही विद्वानों की पुस्तकों में एक भी बाल खेल गीत संग्रहित नहीं है। आज कल विभिन्न विषयों पर मुण्डारी में अनेक शोध-कार्य किये जा रहे हैं। पर बाल खेल गीतों पर अब तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है। शोध-निदेशकों और शोधार्थियों का ध्यान इस ओर अभी नहीं गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में मैंने बाल खेल गीतों को संकलित करने का असफल प्रयास प्रारम्भ किया है। मैंने कुछ बाल खेल गीतों को Encyclopedia Mundarica से और कुछ जन मानस के सहयोग से संकलित किया है। सम्प्रति पुस्तक में इनकी संख्या बिल्कुल नगण्य है।

बाल खेल गीतों के साथ मैंने कतिपय बाल-मंत्रों को संकलित किया है। यथा-लोहा चींटी बांधने का मंत्र, केंकड़ा बांधने का मंत्र और अगामरियों का मंत्र शामिल है।

बाल खेल गीतों में कुछ आमंत्रण गीत भी हैं। बाल आमंत्रण गीतों में खेल आमंत्रण गीत मुख्य हैं।

आज समाज संक्रमण काल के दौर से गुजर रहा है। बच्चों पर टी०वी० और वीडियो गेम हावी है। प्रतिदिन बाल खेल गीतों से बच्चों का संबंध विच्छेद हो रहा है। यदि समय रहते हमने इन बाल खेल गीतों को संकलित नहीं किया तो एक दिन पूर्वजों से प्राप्त यह अमूल्य धरोहर हमेशा-हमेशा के लिए विस्मृति के गर्भ में खो जायेगा।

लेखक

परिचय

हिन्दी में जिसे "पहेली" की संज्ञा दी गई है वही मुण्डारी में "नुतुम या लुतुम कहानि" के नाम से जाना जाता है। "नुतुम कहानि" पहेली का ही समानार्थक शब्द है। प्रकृत्ति की दृष्टि से भी दोनों में पूर्ण समानता है। केवल भाषिक मिलता है। मुण्डारी की "नुतुम कहानि" दो शब्दों के मेल से बना है नुतुम और कहानि। नुतुम का अर्थ होता है नाम ओर कहानि का अर्थ होता है कथा। नुतुम कहानि में कथावाचक श्रोता क समक्ष श्रोता से उस कहानी का नाम पूछता है। कथा का नाम बताने में यदि श्रोता असमर्थ रहता है तो कथावाचक श्रोता के समक्ष शर्त्त रखता है। कथा का नाम जानने के लिए श्रोता को कथावाचक की शर्त्त माननी पड़ती है। कथावाचक शर्त्त के रूप में श्रोता से किसी बुरू (मेला) गाँव या बाजार आदि की याचना करता है। इस पर यदि श्रोता सहमत नहीं होता है तो कथावाचक श्रोता से किसी दूसरे विकल्प की याचना करता है। कथावाचक एक एक कथा के लिए एक-एक शर्त्त रखता है। ऐसा नहीं है कि वह एक शर्त्त मान लेने पर श्रोता को अपनी सभी कथाओं का नाम बता देता है। कथावाचक इस बात का भी ध्यान रखता है कि याचित शर्त्त की पुनरावृत्ति न हो। पुनरावृत्ति होने की स्थिति में कथावाचक श्रोता को स्थिति से अवगत करा देता है।

शर्त्त मान लेने पर कथावचाक उस बुरू गाँव या बाजार के रास्ते को श्रोता के लिए अवरूद्ध कर देता है और उनसे बुरू गाँव या बाजार जाने के लिए मना करता है। कथावाचक द्वारा मना करने पर श्रोता को उसकी बात माननी पड़ती है। बात मानने पर ही कथावाचक अपनी कथा का नाम श्रोता को बताता है।

नुतुम कहानि नामकरण के संबंध में मेरा यह मानना है कि इसमें कथावाचक मूल रूप से श्रोता से कथा का नाम ही पूछता है। कथा का नाम पूछना इसकी प्रधानता है। कथा का नाम पूछने की प्रधानता के कारण ही इसका नामकरण नुतुम कहानि पड़ा है इसमें कोई दो राय नहीं है।

पहेलियाँ झारखण्ड की विभिन्न जनजातीय भाषाओं में भिन्न-भिन्न नाम से प्रचलित है। झारखण्ड में पांच प्रमुख जनजातीय भाषाएँ बोली जाती हैं मुण्डारी, संथाली, हो, कुड़ुख़ और खड़िया। मुण्डारी और हो में पहेली को "नुतुम कहानि",

संथाली में "भेंथा-कथा", कुडुख़ में "बुफुर-नखरना", और खड़िया में बुउझी कोन उतुनना कहा जाता है। यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं में भी पहेलियाँ मिलती हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में यहाँ मुख्य रूप से नागपुरी, कुरमाली, खोरठा और पंचपरगनिया बोली जाती है। नागपुरी में इसे "बुझवाइल", कुरमाली में "जान केहनि", खोरठा में और पंचपरगनिया में "जानेक काथा" कहा जाता है। इस तरह से कहा जाय तो पहेलियाँ सर्वजनीन और सर्वव्यापी है। ये सभी भाषाओं में पाई जाती हैं।

उत्पत्ति -

पहेलियों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई यह जान पाना आसान काम नहीं है। फिर भी यह तो तय है कि पहेलियों की परम्परा बहुत पुरानी है। संस्कृत साहित्य में पहेली के लिए दो शब्दों का प्रयोग मिलता है प्रहेलिका और ब्रह्मोदय। दोनों पहेली के ही पर्यायवाची शब्द हैं। वैदिक काल में "ब्रह्मोदय" अश्वमेघ यज्ञ के अनुष्ठान का एक हिस्सा था। बलि से पूर्व ब्राह्मण होता से ब्रह्मोदय पूछता था। रामनरेश त्रिपाठी वैदिक काल से ही पहेलियों का आरम्भ मानते हैं। इनके मतानुसार पहेलियाँ तब से हैं जब से मनुष्यों का समाज बना, जब विचारों का आदान-प्रदान जारी हुआ, व्यवहारिक तजुरबे हुए और प्रकृति एवं मनुष्यकृत चीजों को देखकर लोगों में कौतुहल उत्पन्न हुआ। 1 प्रसिद्ध विद्वान फ्रेजर के अनुसार पहेलियों की रचना उस समय हुई होगी जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में किसी प्रकार की अड़चन पड़ी होगी। 2 बातचीत के प्रसंग में भी साधारणतया यह देखा गया है कि जब हम यह नहीं चाहते कि उपस्थित लोगों में से सभी हमारी बात समझें, तो जिन लोगों से हमें जो कहना होता है उसे ऐसी पद्धति के आश्रय से कहते हैं कि अन्य लोगों के लिए वह दुर्बोध हो जाय। गोपनीयता की इसी प्रवृति से पहेली का जन्म होता है।

परिभाषा -

विभिन्न विद्वानों ने पहेली अर्थात् "नुतुम कहानि" की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। लेकिन उन परिभाषाओं में पंडित राम नरेश त्रिपाठी की परिभाषा सर्वाधिक

---

1. पं० रामनरेश त्रिपाठी – ग्राम साहित्य (तीसरा भाग) पृ० 287
2. डॉ० जे०जी० फ्रेजर – 'दी गोल्डन बाउ', नवां भाग, पृ० 121
3. डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय – लोक साहित्य की भूमिका, पृ० 159

उपयुक्त जान पड़ती है। रामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार – "पहेली बुद्धि पर शान बढ़ाने का यंत्र या स्मरण शक्ति और वस्तु ज्ञान बढ़ाने की कलें हैं।"

अइञ् लेकाते दो – "नुतुम कहनि होनकोअ: सेंड़ां हरा तेअ: मियद् बुगिन ओड़ो: तनअ: सनब् ओड़ो:, नेआ मिद् किसिम रेअ: सेड़ां हरा तेअ: रानुओ तनअ: ओको रानुते होनकोअ: सेंड़ां दिमसि हराइदि पोसाइदि।"

मेरे विचार से पहेली (अर्थात् नुतुम कहानि) बच्चों के बौद्धिक विकास का एक अत्यन्त उपयोगी और सुन्दर साधन है और यह एक ऐसा ज्ञानवर्द्धक औषधीय चूर्ण अर्थात् टॉनिक भी है, जिसके अनावरत सेवन से बच्चों में ज्ञान का उतरोत्तर विकास होता है।

एटअ: कजि दो "नुतुम कहानि" होनकोअ: सेंड़ा-तुला मियद् सनबो तनअ:। चिअ: चि होनको पुरअ: सा मियद् एटअ: नि: लोओ: ते नेअको तेगे अकोअ: सेंड़ा को अपागमा।

दूसरी बात तो यह है कि नुतुम कहानि बच्चों की बुद्धि-परीक्षा का साधन भी है। अक्सर बच्चे इन्हीं नुतुम कहानियों के सहारे एक दूसरे के बुद्धि की परीक्षा लेते हैं।

कथा वचन की विधि –

कथा वाचन के लिए कम से कम दो या दो से अधिक बच्चों की संख्या अपेक्षित होती है। कथा वाचन का कार्य एकत्रित बच्चों में से कोई भी आरम्भ कर सकता है। इसके लिए "टोस" या "बेए: लपु" की आवश्यकता नहीं पड़ती है। मुण्डारी में कथा बतानेवाले को "कहानिनि:" (अर्थात् कथावाचक) और कथा सुननेवाले को "कहानि आयुमको" (यानी कथा के श्रोता) कहे जाते हैं। कथा वाचक के द्वारा कही जानेवाली कथा का नाम कथा के श्रोता बताते हैं। कथा का नाम नहीं बता सकने की स्थिति में श्रोता को कथावाचक के प्रस्तावित शर्त्त को मानने के लिए वाध्य होना पड़ता है। कथावाचक अक्सर कथा का नाम बतानेवाले श्रोताओं से शर्त के रूप में किसी बुरु या मेले की, हाट-बाजार की या किसी गाँव आदि की याचना करता है।

शर्त्त की सहमति मिलने पर कथा-वाचक कथा का नाम बतानेवालों से कुछ इस अंदाज में अपील करता है "तेर तोबे ! बुरु होरा अइञ् जनुमको ते रटापटातनेइञ

रम कोटोङ जदा । अपे अलोपे सेना ।" अर्थात् देखो ! मैंने मेला जानेवाले रास्ते को कांटीली झाड़ियों से बंद कर दिया है; आपलोग नहीं जायेंगे । तब कथा का नाम बतानेवाले श्रोता समावेत-स्वर में उत्तर देते हैं - "हे मर ! काले सेना ।" यानी ठीक है हमलोग नहीं जायेंगे । इतना सुनने के बाद कथावाचक कथा का अभीष्ट नाम श्रोता को बता देता है ।

पुनः वह अपनी दूसरी कथा श्रोता के समक्ष रखता है और उनसे कथा का नाम बताने के लिए निवेदन करता है । संयोग से यदि कथा का कोई श्रोता कथा का नाम बताने में सफल हो जाता है तो पूर्व के कथावाचक की पारी समाप्त समझी जाती है और कथावाचन की पारी कथा का नाम बतानेवाले श्रोता के हाथ में चली जाती है ।

तब दूसरा कथावाचक अपनी कथा श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करता है और उनसे कथा का नाम बताने के लिए निवेदन करता है । यदि कोई श्रोता उसकी कथा का नाम बताने में सफल हो जाता है तो दूसरे कथावाचक की पारी भी समाप्त हो जाती है । तब कथा-वाचन की पारी तीसरे कथावाचक को मिलती है ।

पारी मिलते ही तीसरा कथावाचक कथा-वाचन का कार्य आरम्भ कर देता है । वह श्रोता के समक्ष अपनी कथा प्रस्तुत करता है और उनसे कथा का नाम बताने के लिए निवेदन करता है । इसी प्रकार कथा-वाचन का क्रम देर रात तक चलते रहता है ।

कथा वाचन की कोई पारी पूर्व निर्धारित नहीं रहती है । जो श्रोता जितनी बार कथा का नाम बताने में सफल होता है, वह उतनी बार कथा वाचन का पारी पाता है । जो एक भी कथा का नाम बताने में सफल नहीं होता है उसे कथा वाचन की एक भी पारी नहीं मिलती है । किसी कथावाचक की पारी तब तक यथावत बनी रहती है जब तक कथा का कोई श्रोता उसकी कथा का नाम बताने में सफल नहीं हो जाता है । असफल प्रतिभागी केवल मूकदर्शक बने रह जाते हैं ।

कथा-वाचन से संबंधित वर्जना -

मुण्डा समाज में दिन को कथा-वाचन का कार्य वर्जनीय समझा जाता है । इस वर्जना से संबंधित मुण्डारी में एक उक्ति मिलती है जो इस प्रकार है - "सिंगि

काको कहानिअ, का बुगिआ ।" अर्थात् दिन को कथा-वाचन का कार्य अशुभ होता है । बड़े बुजुर्गों ने योंही ऐसा नहीं कहा है ऐसा कहने के पीछे उनका कोई ने कोई मकसद् अवश्य रहा होगा । बड़े बुजुर्ग यह जानते थे कि कथा-वाचन के कार्य में काफी समय जाया होता है जिससे दिन के कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होता है । इससे वे बचना चाहते थे । इसी मकसद् से ही शायद उन्होंने ऐसा कहा है । अन्यथा इस उक्ति का तात्पर्य किसी अनहोनी या अशुभ घटना के घटित होने से नहीं है बल्कि यह बच्चों से पिण्ड छुड़ाने का एक गुप्त चाल मात्र है ।

विशेषताएँ -

मुण्डारी की पहेलियाँ जो "नुतुम कहानि" के नाम से जानी जाती हैं उनकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

(i) नुतुम कहानियों की आकृति छोटी होती है पर उनका अभिप्राय गूढ़ होता है ।

(ii) नुतुम कहानियों की गुत्थी उलझी हुई डोरी की तरह होती है ।

(iii) नुतुम कहानियों का अभिधार्थ नहीं उसका निहितार्थ वांछित होता है ।

(iv) नुतुम कहानियों में रहस्य और हास्य का पुट भरा होता है ।

(v) नुतुम कहानियाँ मानव मस्तिष्क के लिए जिम्म खाने के उपकरणों की तरह होते हैं जिनकी सहायता से मानव मस्तिष्क का संतुलित विकास होता है ।

(vi) उक्ति-वैचित्र्य नुतुम कहानियों का आधार स्तम्भ है ।

वर्गीकरण -

मुण्डारी में जो नुतुम कहानियाँ मिलती हैं उनमें वर्ण्य विषय की विविधता है । इनका क्षेत्र सीमित नहीं अपितु अत्यन्त विस्तृत है । इन नुतुम कहानियों में साधारण से साधारण और असाधारण से असाधारण वस्तुओं का उल्लेख मिलता है वर्ण्य विषयों की विवधिता के कारण इनका समुचित वर्गीकरण नहीं किया जा सका । फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए इनको निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है :-

(i) घरेलु उपकरणों से संबंधित ।

(ii) जीव जगत् से संबंधित ।

(iii) प्रकृति से संबंधित।

(iv) कृषि उपकरणों से संबंधित।

(v) शरीर के विविध अंग प्रत्यांगों से संबंधित।

(vi) वनस्पति जगत् से संबंधित।

(i) **घरेलु उपकरणों से संबंधित** – इस वर्ग की नुतुम कहानियों में घर के अंदर जो उपकरण काम में लायी जाती है, ये सभी उपकरण इनके वर्ण्य विषय होते हैं :-

(क) मियद गेले बाबा ते गोटा ओड़अ: पेरेगो: अ।
धान की एक ही बाली से पूरा घर भर जाता है।
दिया/दीपक।

(ख) मियद् बुढ़िया ओड़अ: कुडम कुडम ते तोरोए: हेर बियुरेअ।
एक बुढ़िया है जो अपने घर के किनारे-किनारे राख छींटते जाती है।
जंति/जांता।

(ग) मियद् दोरोया रे मरङ खूंटा बिदाकना। एना चेतन रे ओड़अ: बइअकना। एनडे इसु पुरअ: खुरजि दोअकना। खुरजि लोओ:अ, ओड़अ: दो का।
एक समुद्र है उसमें बड़ा-सा खूंटा गड़ा हुआ है। खूंटे के ऊपर घर है। घर में बहुत सारी सम्पत्ति है। सम्पत्ति तो जल जाता है, पर घर नहीं जलता है।
हुका/हुक्का।

(घ) मियद् होड़ो ओड़अ: तेदो हपे हपेए: सेनो: अ, पिड़ि रे दोए: ककलाएअ।
एक आदमी है, जो घर से चुपचाप निकलता है, बाहर जाते ही चिल्लाने लगता है।
कोंडे:/टंगिया।

(ङ) मियद् होड़ो सबि लोओ: गेए: सुसुना।
एक आदमी है, जो हाथ लगाते साथ नाचने लगता है।
जोनो:/झाड़ू।

(ii) **जीव जगत् से संबंधित** – इस वर्ग की नुतुम कहानियों में भांति भांति के जीव जन्तुओं का उल्लेख मिलता है।

(क) गोले लेरे बंड़ासि डाङ एकेलाओ:अ।
सिसकारी मारने पर बन्सी डाङ हिलने लगता है।
सेता चद्लोम/कुत्ते की पुंछ।

(ख) मियद् होड़ो जोम लेआतेए: उला उड़ङएअ।
एक आदमी है जो खाने के बाद उसे उगल देता है।
बदुलि/भदुल।

(ग) मियद् होड़ो लाई: तेए: सेनेअ।
एक आदमी है जो पेट से चलता है।
बिङ/सांप

(घ) मियद् होड़ो निदा दोए: लेलेअ, सिंगि दो काए: लेलेअ।
एक आदमी है जिसको रात में दिखाई देता है, दिन को दिखाई नहीं देता है।
कोकोर/उल्लू

(ङ) लंगड़ा महत्तो कुंआए: गेले: तना।
लंगड़ा महत्तो कुँए की खुदाई कर रहा है।
कड़ाकोम/केकड़ा।

(iii) **प्रकृति से संबंधित** – इस कोटि की नुतुम कहानियों में सूर्य, चन्द्रमा, तारे, हवा, पानी, वर्षा, बिजली, फूल, फलादि का वर्णन रहता है –

(क) मियद् होड़ो हिजु: तन दो काए: लेलो:अ, सुसुन तन दोए: लेलो:अ।
एक आदमी है, जो आते हुए दिखता नहीं है नाचते हुए दिखता है।
होयो/हवा

(ख) ने दिसुम रे बरिया गेअ फड़अ: सान।
इस दुनिया में दो ही कटफड़े हैं।
ओते आद् सिरमा/जमीन और आसमान।

(ग) ने ओते दिसुम रे बरिया गेअ गोंइटा ।
इस दुनिया में केवल दो गो गोंइटा है ।
सिंगि आद् चंडु:/सूर्य और चांद ।

(घ) अपु होन मियद् नुतुम, ठेमका कोड़ाअ: एटअ: नुतुम ।
बाप बेटा का एक नाम, ठेमका का दूसरा नाम ।
मदुकम/महुआ ।

(ङ) कुबा हड़म बुलुङ गेए: नमा ।
कूबड़ बूढ़े को नमक बहुत प्यारी लगती है
जोजो/इमली ।

(iv) **कृषि उपकरणों से संबंधित** – कृषि से संबंध रखनेवाले सभी उपकरण इस वर्ग की नुतुम कहानियों में आते हैं ।

(क) मियद् होड़ो सेतअ: रेए: उनुमेना, तिकिन एनङए: उड़ुङओ:अ ।
एक आदमी है, जो भोर को डुबकी लगाता है, दोपहार को बाहर निकलता है ।
पाल/फार ।

(ख) मियद होड़ो सिमको रअ: तेए: ककलाएअ ।
एक आदमी है जो मुर्गा बांगते ही चिल्लाने लगता है ।
कुंआ डाङ/टेड़ा डाङ ।

(ग) मियद् होड़ो जेटे सिंगि दोको थेरगिड़िअ, जरगि दअ: दोको हलङ अगुइअ ।
एक आदमी है जिसको गर्मी में फेंक देते हैं, बरसात में वापस लाते हैं ।
बाबा/धान ।

(v) **शरीर के विविध अंग प्रत्यांगों से संबंधित** – शरीर के सभी अंग-प्रत्यांग इस वर्ग की नुतुम कहानियों के वर्ण्य विषय होते हैं ।

(क) मियद् बिर रे मिद् रकम रेअ: गे दारु मेनअ: ।
एक जंगल है, जिसमें एक ही किस्म के पेड़ हैं ।
ऊब/बाल ।

(ख) मियद् बुरु रे एया पुटअःकना ।
एक पहाड़ है, जिसमें सात संकटकालीन द्वार हैं ।
बोओः/सिर ।

(ग) गेल होड़ो तेको होयोएअ, मिद् होड़ोएः जोमेअ ।
दस मिलकर बनाते हैं, एक उसे खाता है ।
गेलेया कटुः आद् मोचा/दस अंगुलियाँ और मुँह ।

(घ) नी नाअः गेएः सेनोःअ, नाअः गेएः हिजुःअ ।
यह पल में जाता है, पल में लौट आता है ।
मेद/आंख ।

(ङ) मियद् होड़ो अरअः गड़ा रेएः खरा तना ।
एक आदमी है जो लाल दोहार में पाटा चला रहा है ।
लेएः/जीभ ।

(vi) **वनस्पति जगत् से संबंधित** – सभी प्रकार के पेड़ पौधे इस वर्ग की नुतुम कहानियों के वर्ण्य विषय होते हैं –

(क) कदलङ बोओः देंओड़ाएः रुम तना ।
गंजे सिरवाला ओझा चक्करित मुद्रा में देवता का आह्वान कर रहा है ।
सरजोम जो/सखुए का फल ।

(ख) गड़ा गड़ा ते रंगा चटु अतु तना ।
नदी की धारा में रंगीन घड़ा बह रहा है ।
लोवा/डूमर का पका फल ।

(ग) गुलि गइएः केड़ा तना, कुन्चि गइएः टोकोएः एअ ।
गोल गाय बुला रही है, कुबड़ी गाय लात मार रही है ।
दोदाड़ि जो आद् जनुम/बैर का फल और उसका कांटा ।

(घ) अयर रे नोलद् चटु, लतर रे नवा चटु ।
आगे करिया घड़ा, नीचे नयका घड़ा ।
जरोम सोसो/पकल भेलवा ।

(ङ) जरगि दअः तेबअः जन रे मियद् होड़ो पेरेंड़ेद गेएः बइअ ।
बरसात आने पर एक व्यक्ति केवल शहनाई बनाने का काम करता है । टुंटुरा बा/धतुरे का फूल ।

अ

1. अटामटा बिरको तलाते को सेंदेरा उडुङकोअ, पुंडि दिरि रेको गेद्कोअ।
घने जंगल के बीच से शिकार ढूंढ़कर लाते हैं, सफेद पत्थर में उसे काटते हैं। (सिकु/चीलर)

2. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनके ऊब्को राड़ातदा।
घने जंगल के बीच में देवकन्याओं की जुल्फें खुली हुई हैं।
(बद्चोम्/सवाई घास)

3. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनको बरछा को सिंदुब्तदा।
घने जंगल के बीच में देवपुत्रों ने बरछी गाड़ दी है। (हेल्ता/करील)

4. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनको डुबा को हरुबाकदा।
घने जंगल के बीच में देवपुत्रों ने कटोरी उल्टा दिया है।
(तोर मांड़ा ऊद्/मशरूम)

5. अटामटा बिरको तला रे कोसोंड़ा को रड़े: तदा।
घने जंगल के बीच में किसी ने कोसड़ां सुखाया है। (गुड़ु हेयोल)

6. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनको दुमङ को सिदुबतदा।
घने जंगल के बीच में देवपुत्रों ने मांदर औंधा दिया है।
(कुला बोओ:/बाघ का सिर)

7. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनको कुआं को गेले: तदा।
घने जंगल के बीच में देव पुत्रों ने एक कुंआ बनाया है।
(मुई: उंडु/चिंट्टी का बिल)

8. अटामटा बिरको लता रे बोंगा होनको टका को तोपा तदा।
घने जंगल के बीच में देवपुत्रों ने रुपये गाड़ दिये है।
(पुटुकुइ:/रुगुड़ा)

9. अटामटा बिरको तला रे बोंगा होनको सूई को उगुर तदा।
घने जंगल के बीच में देवपुत्रों ने सुई घुसा रखा है।
(गुड़ु चद्लोम/मूसे की पूंछ)

10. अटामटा बिरको तला रे सांड़ को तोल तअ:इअ।
घने जंगल के बीच में सांड़ कोई खूट के रख दिया है। (लुमम/रेश्म)

11. अटामटा बिरको तला रे राजा होनको पइकि तना।
घने जंगल के बीच में राजकुमार पइका नाच रहे हैं। (सरजोम/सखुआ)

12. अटामटा बिरको तला रे पतराअः को हरुब्तदा ।
घने जंगल के बीच में किसी ने पतरे को उल्टा दिया है ।
(बड़ायऊद्/लोहरा कुखुड़ि)

13. अड़ाकटा पलद पिलिद ।
कांड़ के रास्ते में चमक दमक । (कटेया/मूसा)

14. अतोम अतोम तेदोएः जङ गेअ, तला रे दोएः जिलु गेअ ।
बहरी हिस्से में हड्डी है, भीतरी हिस्से में मांस ।
(परकोम/खटिया)

15. अपि होड़ो कुड़िको मियद् गेअ चटु ।
तीन लड़कियाँ हैं, उनके सिर में एक ही घड़ा है । (जुला/चूल्हा)

16. अपुम दो मइ कोतीअ ? जीद् तन होड़ो गोएः ते ।
एंगाम दो मइ कोतीअ ? गोएः अकन होड़ो जीद् ते ।
तुम्हारा बाप कहाँ गया है बेटी ? जीउते को मारने गया है ।
तुम्हारी माँ कहाँ गई है बेटी ? मरे हुए को जिलाने गई है ।
(बियंड़ा/विचड़ा)

17. अमअः लाईः रे सेंगेल को तिङाकदा ।
तुम्हारे पेट में आग जल रहा है । (रेंगेः/भूख)

18. अयर रे दो बड़ाय कुड़ि, तयोम रे दो पेंड़ाय कुड़ि ।
आगे लोहार की लुगाई, पीछे तांती की लुगाई । (सोसो/भेलवा)

19. अयर रे दत्रोम, तला रे डाकी, तयोम रे जोनोः ।
आगे हसुआ, माझे टोकरी, पीछे झाड़ू ।
(उरिःमोचा, उरिः लाईः आद् चद्लोम)

20. अरअः गड़ा ते पुंडि हसा खरा उड़ुङोः अ ।
लाल दोहार में पाटा चलाने पर सफेद मिट्टी निकलता है ।
(लेएः रअः हुमु/जीभ का मैल)

21. अरअः हड़ा रे हेंदे डिमचुअद् दुबाकना ।
लाल बैल की पीट पर काले रंग का डेचुआ बिरजमान है ।
(सोसो जो/भेलवा का फल)

22. अइञ्इञ् अपिर धड़िअः मेन्दो चेंड़े का तनिः ।
मैं उड़ सकता हूँ, पर पंक्षी नहीं हूँ । (गुडि/पतंग)

23. अपु होन मियद् नुतुम, ठेमका कोड़अः एटअः नुतुम ।
बाप बेटा का एक नाम, ठेमका का दूसरा नाम । (मदुकम/महुआ)

24. अंड़ि सकम केंदरोद् ।
अंजीर की पत्ती रेघा-रेघा । (सुकुरि लुतुर/सूअर का कान)

25. अरअः बीवी हाहा-हिहि ।
लाल बीबी हाहा-हिहि । (मरचि/मिर्च)

उ

26. उपुन हागेआ को बबार घुसा ।
चार भाई को दो-दो घूसा । (मंचि/मचिया)

27. उपुन होड़ोको रूडुङअ, बर होड़ोकिङ गुगुमा,
बर होड़ोकिङ लेलेला, मिद् होड़ो सिमएः हरा ।
चार महिलाएँ कूटती हैं, दो महिलाएँ फटकती हैं;
दो महिलाएँ देखती हैं, एक महिला मुर्गी भगाती है ।
(उरिः कोअः उपुन कटा, बरिया लुतुर, बरिया मेद, मियद् चद्सोम)

28. उपुनिया कटातेनिः निरतना; बनोः कटातेनिः हर तना,
बनोः बोओः तेनिः लेल तना ।
चार पैरवाला भगता है; बिना पैरवाला पीछा करता है,
बिना सिरवाला देखता है । (चोके, बिङ अर कड़ाकोम)
(मेंढक, सांप और केंकड़ा)

29. उल्टा पुल्टा घुमङ सयोब ।
उल्टा पुल्टा घुमनेवाला साहब । (लद्/रोटी)

30. उल्टा पुल्टा गुमन सय कुलाएः जोम किःअ ।
उल्ट पल्ट घुमनेवाले साहब को शेर खा गया । (लद्/रोटी)

31. उलि उलि हुलदुब् ।
आम का हर तना झबराया ही रहता है । (उरिः चद्लोम/गाय की पूँछ)

ए

32. एंगा अपुकिन दुबाकना, जइहोनको कचइरि तना ।
माँ बाप बैठे हुए हैं, नाती पोते गप्प लड़ा रहे हैं । (इलि/हंड़िया)

33. एंगा दो लपुवा, होन दो डंगुमा ।
माँ कद की नाटी, बच्चे तन के मोटे । (बेंगड़ा/बैंगन)

34. एंगा दो सेलेबोले होनको दो रिसा ।
माँ दिखती है खूबसूरत, बच्चे दिखते हैं घुंघराले । (रंगा नेद् जाड़ा/)

35. एंगा दो सेलेबोले, होनको दो कुबा ।
माँ दिखती है खुबसूरत, बच्चे दिखते हैं कूबड़े । (कदल/केला)

36. एंगा दो रिति पिति, होनको दो कुबा ।
माँ नन्हें पत्तों की लड़ी जैसी, पर संतति उसकी होती है टेढ़ी ।
(जोजो जो/इमली का फल)

37. एंगा दो रिसा-रिसा, होनको दो जुरुड़ु ।
माँ दिखती है बल खाए हुए बालों जैसी, पर उसके बच्चे होते हैं चिकने ।
(कंटाड़ा ओड़ो: कोसा/कटाहल और उसका कोवा)

पाठभेद - एंगा दो रिटु-पिटु, होनेको दो जुरुड़ु ।
माँ बल-खाए हुए बालों जैसी, पर उसके बच्चे होते हैं चिकने ।
(कंटाड़ा ओड़ो: कंटाड़ा रअ: कोसा/ कटाहल और उसका कोवा)

38. एदेल दारु राउड़ जना, बजनिंयां को हला हला ।
सेमल का पेड़ गिर गया, उसके लेनेवालों की भीड़ लग गई ।
(गुरि:/गोबर)

39. एया नड़ि मेन्दो मियद् गे जोम्पा ।
सात गो लत्तर है लेकिन उसका एक गो गुच्छा है । (पीटि/बाजार)

40. ए होड़ो मिसिकोअ: मियद् गे बोओ: ।
सात बहने हैं, पर उनका एक ही सिर है । (रसुंड़ि/लहसुन)

41. ए सिरमा रेन खसी मिद् खांडा गेए: जिलुइअ ।
सात साल का खस्सी एक ही टुकड़ा मांस करता है ।
(सुटि/घोंघी)

ओ

42. ओड़अ: रे मंदुलि होटो:, पिड़ि रे समा होटो: ।
घर में रहता है तो गले में हार (मंदुलि) पहनता है, बाहर जाता है तो गला खाली रखता है । (मेरोम जोड़ा/बकरी का जोड़ा)

43. ओते बितर रे गड़ि हड़ाको सेनेअ ।
जमीन के अंदर ही अंदर गाड़ीवान (बैल) चलते हैं ।
(निंदिर/दीमक)

44. ओह बुड़ा, बूढ़ा ठाकुर, ओड़अः मेनअः दुअर बनोः ।
ओह नाना, बूढ़ा ठाकुर, घर है पर दरवाजा नहीं है ।
(तोलाकन लुमम/बंधा हुआ रेश्म)

45. ओबोराकन को ओबोराकना, संबिराकन को संबिराकना ।
कुछ लोग पेट के बल लेटे हैं तो कुछ लोग पीट के बल लेटे हैं ।
(केचोः/खपरा)

46. अउरि तुदे रेदो बड़ाय ऊद, तुद् केआते दो तोरमांड़ा ऊद् ।
उखाड़ने से पहले बड़ाय ऊद, उखाड़ने के बाद तोरमांड़ा ऊद ।
(बिलाई बका/बिलार बकुला)

क

47. कटेयाएः निर जना, पोटा रतम जना ।
मूसा भाग गया, अंतड़ी फंस गया ।
(लिजअः तेङ डुंगी/कपड़ा बुनने का डोंगी)

48. कबरा सेताअः पोटा इसु सिबिला ।
कबरा कुत्ते की आंत बड़ी स्वादिष्ट होती है ।
(कंटाड़ा कोवा/कटाहल का कोवा)

49. करमड़ा दोएः ओटङ जना, सकम दो एनतअः रे गेअ ।
लाह (करमड़ा) उचड़ गया, पत्ता जहाँ का तहाँ रह गया ।
(कटा मंडा/पद चिह्न)

50. कदलङ बोओः देंओड़ाएः रुमतना ।
गंजे सिरवाला ओझा चक्करित मुद्रा में देवता का आह्वान कर रहा है ।
(सरजोम जो/सखुए का फल)

51. कुद् उण्डु रेओं चेंओ ।
खटखोली की छेद रेओं चेंओ । (सगिड़ि उनुडु/पहिया का छेद)

52. कुडम कुडम बोबोरकोद ।
घर की पिछवाड़ी में बट कलेजी ही बट कलेजी । (तोरोएः/राख)

53. कुबा गइअः तोवा इसु सिबिला।
कूबड़ गाय की दूध बड़ी स्वदिष्ट होती है। (कदल/केला)

54. कुबा बुढ़िया इकिर रेएः निर बोलो गेअ।
कूबड़ी औरत दौड़ते हुए दाह में घुसती है। (बंड़ासि/वनसी)

55. कुबा हड़म बुलुङ गेएः नामा।
कूबड़ बूढ़े को नमक बहुत प्यारी लगती है। (जोजो/इमली)

56. कुबा गुंडिअः हतङ इसु सिबिला।
कूबड़ गाय की मगज बहुत स्वदिष्ट होती है। (कदल/केला)

57. केचअः केचअः ओड़अः रे कोओः को सुसुन तना।
टूटे हुए घर में बगुलों की जमात नाच रही है।
(गंगाएः अता/लावा)

58. केचअः हटअः दिङ दङ।
टूटल सूफ झझराल। (कदल सकम/केले की पत्ती)

59. कोटोले चोंम्बोले, हइ बोन बोन, पुंडि सुकु कड़ाकोमाकना।
पटसन की कली है, उसकी नोकवाली मुखाकृत्ति है, देह मच्छली की पीट जैसी है, सफेद रंग की लौकी केंकड़ा बनी है। (सिम जरोम/मुर्गी अण्डा)

60. कोतेम तनाएअ लेंडेङ कोडेङ ? जां तेगेअ रिसुड़ि।
कहाँ जा रहे हो भाई टेढ़ामेढ़ा ? कहीं भी जा रहा हूँ भाई उबरे दांतोंवाले ?
(जम्बुड़ि बिङ/डोंड़ सांप)

61. खसरा सेता जमानएः सिबिला।
खसुवाह कुत्ते का मांस बहुत स्वदिष्ट होता है। (कंटाड़ा/कटहल)

62. खुंटि पिड़ि लो तना; कदमा रेन चम्बरा मुण्डाएः हकव तना, सेलद्अः ते सुकुल उड़ुङ तना।
खूँटी टांड़ में आग लगी है; कदमा का चम्बरा मुण्डा बुला रहा है, सेलदअः गाँव से घूँआ निकल रहा है। (हुका/हुक्का)

63. गड़ा गड़ा ते अरअः हड़ा हुःकर हड़गुजदा।
नदी के रास्ते से लाल सांड़ हुंकार भरते हुए उतर रहा है।
(बाड़ि दअः/बाढ़ का पानी)

64. गड़ा गड़ा ते कांता अतु तना।
नदी की धारा में लेदरा बह रहा है। (गदेद्/सेंवार)

65. गड़ा गड़ा ते कंकि लउर लउर।
नदी के रास्ते से सारस पंख फैलाये जा रही है। (जालोम/जाल)

66. गड़ा गड़ा ते कोको: डंडअ: अतु तना।
नदी की धारा में हॉकी डंटा बह रहा है। (सेता चद्लोम/कुत्ते की पूंछ)

67. गड़ा गड़ा ते नजोम चुकअ: अतु तना।
नदी की धारा में डायन की मटकी बह रही है। (चोके/मेंढ़क)

68. गड़ा गड़ा ते जिंतु पटि अतु तना।
नदी की धारा में जिंतु की चट्ठाई बह रही है। (गदेद्/सेंवार)

69. गड़ा गड़ा ते नोलद् चटु अतु तना।
नदी की धारा में स्याह जल-पात्र बह रहा है। (जरोम कुदा/पकल जामुन)

70. गड़ा गड़ा ते पपड़ा गंडु अतु तना।
नदी की धारा में पपड़ा लकड़ी का पीढ़हा बह रहा है। (चोके/मेंढ़क)

71. गड़ा गड़ा ते पोटा कुड़िद् लउर लउर।
नदी के रास्ते चील पंख फैलाये जा रही है। (गिरा/गिरा)

72. गड़ा गड़ा ते पुति हिसिर अतु तना।
नदी की धारा में मोतियों की माला बह रही है।
(चोके जरोम/मेंढ़की के अंडे)

73. गड़ा गड़ा ते रंगा चटु अतु तना।
नदी की धारा में रंगीन घड़ा बह रहा है। (लोवा/डूमर का पका फल)

74. गड़ा गड़ा ते लका कोड़ा पचिरिए: थपअ: तना।
नदी के रास्ते में लका दीवाल उठा रहा है। (कड़कोम/केंकड़ा)

75. गन गन हसा, सोना रेअ: पेटी, ओटअ: केआते लेल लेरे कोदे लद लेलो: अ।
घन घन मिट्टी; सोने की पेटी, खोलकर देखो तो मड़ुवा की रोटी।
(हुरुम सुकु दा/मधुमक्खी का छत्ता)

76. गंड़ि उन्ड़ु मेयोङ मेयोङ।
पहिया का छेद म्याऊँ म्याऊँ। (कुद् उन्ड़ु/कठखोली का छेद)

77. गुलि गइए: केड़ा तना, कुनचि गइए: टोकोए: अ।
गोल गाय बुला रही है, कूबड़ी गाय लात मार रही है।
(दोदाड़ि जो आद् जनुम / बैर का फल और कांटा)

78. गेल होड़ो तेको गोए: कि:अ, गिड़ि दो काको इतु केदा ।
दस ने मिलकर मारा, लेकिन फेंकने नहीं जाना ।
(सिंकिंड़ि/मच्छड़)

79. गेल होड़ो तेको होयोएअ, मिद् होड़ोए: जोमेअ ।
दस जन मिलकर बनाते हैं एक जन उसे खाता है ।
(गेलेया कटु: आद् मोचा/दस गो ऊँगली और मुँह)

80. गोओ: तनिअ: कटा का लेलो:अ, गोओ:अकइ मुरदारअ: उपुन कटा लेलो: अ ।
भार ढोनेवाले का पैर नहीं दिखता है, ढोये हुए मृतक का चार पैर दिखता है । (बिङ आद् चोके/सांप और मेंढ़क)

81. गोए:अकन उरि: सयदेअ ।
मरी हुई गाय सांस लेती है । (चपुवा/धौंकनी)

82. गोए:अकन उरि: रअ:एअ ।
मरी हुई गाय चिल्लाती है । (ढांका/ढांक)

83. गोले लेरे बंड़ासि डाङ एकेलाओ:अ ।
सिसकारी मारने पर बनसी डाङ हिलता है ।
(सेता चद्लोम/कुत्ते की पूँछ)

84. गोले लेरे बुंडु बंदा एकेलाओ:अ ।
सिसकारी मारने पर बुण्डू का बांध हिलता है ।
(सेता चद्लोम/कुत्ते की पूँछ)

च

85. चटु चटु तिरिङाकना ।
घड़े के ऊपर घड़ा रखा हुआ है । (हुक्का/हुक्का)

86. चटु दो इसिनो:अ, चउलि दो का इसिनो:अ ।
घड़ा पकता है, चावल पकता नहीं ।
(कंटाड़ा/कटहल)

87. चि: चि: चेंड़े खंडि गुड़ुलुए: जोमेअ ।
एक छोटी सी चिंड़िया बीस पइला गोंदली खा जाती है ।
(अंड़ि जो/अंजीर का फल)

88. चीम लेलिइञा, अइञ सेनो:अ, अमअः जिलुइञ् जोमेअ।
क्या तुम मुझे देख पाओगे; हम जायेंगे, तुम्हारा मांस खायेंगे।
(बिङ/सांप)

89. चिरपि हइ उटुल पुटुल।
पोटी मच्छली छटपटाते रहती है। (अलङ/जीभ)

90. चुकअः चुकअः पुंडि रम्बड़ा।
मटकी पीछे सफेद ऊड़द। (डाटा/दांत)

91. चुपद् चुपद् गुड़गु दिरि।
झाड़ी पीछे सिलोट पत्थर। (बेंगड़ा/बैंगन)

92. चेचअः ओड़अः रे बोंगा होनको इनुङ तना।
टूटे हुए घर में भूतों के शावक खेल रहे हैं।
(जोनेहर अता/मकाई का लावा)

93. चेतन दो खसुआ गेअ, बितर रे आंड़ा सिकि मेनअः।
बहर रूखड़ा है, अंदर एक आन्ने का सिक्का है।
(करला जो/करेला का फल)

94. चेतन रे अड़ाकटा, बितर रे केचो:।
ऊपर कांड़, भीतर खप्परा। (गुंगु/गुंगु)

95. चेतन रे नोलद् चटु, लतर रे नवा चटु।
ऊपर करिया घड़ा, नीचे नयका घड़ा। (जरोम सोसो/पकल भेलवा)

96. अयर रे नोलद् चटु, तयोम रे नवा चटु।
आगे करिया घड़ा, पीछे नयका घड़ा। (जरोम सोसो/पकल भेलवा)

97. चेतन रे बाओ:अ, बितर रे जोओ:अ।
ऊपर फूल खिलता है, नीचे फल लगता है। (चिनिया बदाम)

98. चेतन रे झन झन, बितर भंग भंग।
ऊपर झन झनाता है, भीतर खोखला रहता है। (दुमङ/मांदर)

99. चेतन रे सेंगेल को तिंङएअ, लतर रे दअः को लदिअ।
ऊपर चूल्हा धराते हैं नीचे अधन चढ़ाते हैं। (हुका/हुक्का)

100. जरकम तुरकम सोला टका सोअबा।
जैसा भी रहेगा उसमें सोलाह रुपया समायेगा ही।
(कंटाड़ा कोआ/कटहल का कोवा)

101. जरगि दअः तेबअः जन रे मियद् होड़ो पेरेड़ेद् गेएः बइअ ।
बरसात आने पर एक व्यक्ति केवल शहनाई बनाने का काम करता है ।
(टुंन्टुरा बा/धतुरा का फूल)

102. जरगी हेंटेटेयोद् मियद् गेएः कटाकना ।
बरसाती हेंटेटेयोद पक्षी का केवल एक ही पैर रहता है । (चतोम/छाता)

103. जरोम उलि आद् पेटोः उलिकिन थेपेर तना ।
पका आम और कच्चा आम एक दूसरे पर प्रहार कर रहे हैं ।
(लोलो मेंड़ेद् आद् कोटासी/गर्म लोहा और हथौड़ा)

104. जियम बुड़ियाअः देयाम देएः धड़िअः ?
क्या तुम दादी की पीठ पर चढ़ सकते हो ? (पचिरि/दीवार)

105. जियम बुड़ियाअः टेयोतद् अड़अःम जोम धड़िअः ?
क्या तुम दादी की पकाई हुई सब्जी खा सकते हो ? (ऊब्/बाल)

106. जियमअः लाईः लोंगोर लोंगोर ।
तुम्हारी दादी का पेट लोंगोर लोंगोर ।
(कंटाड़ा कोवा/कोसा/कटहल का कोवा)

107. जूना होनको सेनोः पे, अइञ्ओइञ् गोएःना ।
बच्चो तुम भी जाओ, मैं भी मरने जाऊँगी । (लमअः जङ)

108. जूआ होनको निरपे, पटि लेकाइञ् कुड़ाना ।
बच्चो तुमलोग जाओ, मैं चट्टाई की नाई मुड़ जाऊँगी ।
(सिङ अड़अः जो/कोयनार का फल)

ट

109. टुटकी जोनोः कुदाएः रूकु तना ।
टुटकी झाड़ू जामुन हिला रहा है । (मेरोम रेबेड़े/बकरी का मल)

110. टिप टिपुसि टिपुसि थबअःङ रेओ कएः गोजोःअ ।
अदना सा है पर पटक के मारो तो मरता नहीं है । (लुमङ/रेश्म)

ड

111. डिल डिल बमाड़े तला लाईः रेएः पोएताकाअः ।
तोंदु ब्राह्मण बीच पेट में ब्रह्मसूत्र धारण करता है । (चरखा/चरखा)

112. डिल डिल बमाड़े तला लाई: रेए: करधनीअकना।
तोंदु ब्राह्मण बीच पेट में करधनी बांधता है।

(कुमुनि/कुमनी)

113. डुंडु डुंडु बकरा, ओड़अ: ओड़अ: ए बियुरेना।
अदना सा बकरा, घर घर घूमता है। (टेओअ:/पइला)

114. डुर बोओ:ए देंओड़ाओ:अ।
तीतर का सिर ओफाई करता है। (सरजोम जो/सखुए का फल)

ढ

115. ढाएपे ढीएपे, गोटा तेअ: चेपेदेपे।
दमभर कूटो, गोटे को चिपटा बनाओ। (तबेन/चिउड़ा)

116. ओबोराकनको ओबोराकना, संबिराकनको संबिराकना।
कुछ लोग पेट के बल लेटे हैं, कुछ लोग पीठ के बल लेटे हैं।

(केचो:/खपरा)

त

117. तिजुतअ:इ मिंडि गड़ा तेगेए: निरा।
कीड़े पड़ने पर भेड़ नदी की ओर भागती है। (इलि चटु/हंड़िया का घड़ा)

118. ती रे हरियर, मोचा रे अरअ:।
हाथ में हरा, मुँह में लाल। (पान/पान)

119. तेंजम फड़अ: तद सान कम तोल धड़िअ:।
क्या तुम बहनोई की फाड़ी हुई लकड़ी बांध सकते हो?

(सीतद् ओते/जोतल खेत)

120. तोलता कुदा रिबिरिबि।
बांध देने पर जामुन रद रदा के गिरता है। (मेरोम रेबेड़े/बकरी का मल)

121. तला टोनङ रे डुबा को हरुबाकदा।
बीच जंगल में कटोरी औंधाया हुआ है। (कुला मंडां/बाघ का पंजा)

द

122. दारु दो टुपुङ राजाको टपङ।
पेड़ ठूंठ हो जाता है तो राजा निर्धन हो जाता है। (सेता/कुत्ता)

123. दिसुम रे बर होड़ो गे होड़ो ।
दुनियां में केवल दो ही व्यक्ति हैं । (कोड़ा आद् कुड़ि/नर और नारी)

124. दिसुम रे बर होड़ो निदा सिंगिकिन सेन होरा तना ।
दुनियां में दो ही व्यक्ति हैं जो रात दिन चलते रहते हैं ।
(सिंगि आद् चंडु:/सूरज और चांद)

125. दुबमेअ डेम्का दारुइञ् देगा ।
बेटा डेमका, तुम बैठो, मैं पेड़ पर चढ़ता हूँ । (हड़द बोओ:/गेंठी कंद)

126. दुबमेअ ठउड़ा, अइञ् दो दिसुम होनोर तेइञ् सेनो: तना ।
बेटा ठउड़ा, तुम बैठो, मैं दुनियां की सैर करने जा रहा हूँ ।
(ककरू/कोंहड़ा)

127. दुबि दुबि अंकड़ि ।
कचरे की ढेरी पीछे अंकड़ि । (सिम मोचा/मुर्गी का चोंच)

128. दोलागा अबा पुंडि सेरेंग् हबि: इदि तुकाइञ्में, एनाते दो अइञ् गे सेनो:अ ।
पिताजी ! चलिए मुझे सफेद् पत्थर तक साथ दे दीजिए, आगे का रास्ता मैं खुद तय कर लूँगा । (मंडि/भात)

न

129. नजोम चुकअ: हेरडे बेडेङ ।
डायन की मटकीं हिले डोले । (सिंजु जो/बेल का फल)

130. नवा किरिङाकनअ: कुडम रेको दोएअ ।
नयी खरीदी हुई चीज घर के पिछवाड़े में रखी जाती है । (तरपत/)

131. नी नाअ: गेए: सेनो:अ, नाअ: गेए: हिजु:अ ।
यह पल में जाता है पल में लौट आता है । (मेद्/आँख)

132. ने दिसुम रे बरिया गेआ फड़अ: सान ।
इस दुनियां में केवल दो ही कठ फड़े हैं ।
(ओते आद् सिरमा/जमीन और आसमान)

133. ने ओते दिसुम रे बरिया गेअ गोंएटा ।
इस दुनियां में केवल दो ही गोंएठे हैं । (सिंगि आद् चंडु:)

134. नेतअ: रे बुटा, गोटा नड़िअकना ।
बुदा एक तरफ, लतर हर तरफ । (मेद्/आँख)

प

135. पचिरि परोम आते बरिया चुइकिन नुनुतना ।
दीवार के उस पार से गाय के दो बच्छड़े दूध पी रहे हैं ।
(चपुआ मद/धौंकनी)

136. पुंडि ते पुंडिए: गोटकोअ, हेंदे पुंडिए: उडर कोआ ।
सफेद सफेद भर को ही एकत्रित करता है, लेकिन काला सफेद निकालता है । (सिम जरोम/मुर्गी अण्डा)

137. पुंडि तोरोए: रे हेंदे बाबा को हेरेअ ।
सफेद राख में काला धान बोते हैं । (ओनोल/लेखन)

138. पोटोम तन पोटोम तन लोओ: गोजोंड़ाए: पोटोम अदेर् तदा ।
मोरा बांधते बांधते मुगड़ा मोरा के अंदर ही रह गया ।
(कंटाड़ा बोथा/कटाहल का बोथा)

139. बरंगो रेको रअ: तना, गुनतुरा रेको जरातदा ।
बरंगो (गांव) में लोग रो रहे हैं गुनतुरा (गाँव) में आग लगी है ।
(हुका/हुक्का)

ब

140. बर होड़ोकिङ लेलकेदा, गेल होड़ोको रिमकेदा, मिद होड़ोए: जोम केदा ।
दो व्यक्तियों ने देखा, दस व्यक्तियों ने उठाया, एक ने खाया ।
(बरिया मेद, गेलेया कटु: अर मियद मोचा/दो आँखे, दस ऊँगलियाँ और एक मुँह)

141. बर होड़ो कुड़िकिङ उंगुद् लपअ: तना ।
दो महिलाएँ हैं दोनों में कमर झुकाने की होड़ लगी हुई है ।
(चपुवा/धौंकनी)

142. बर होड़ो कुड़िकिङ मियद् टरकि तेकिन टरकिअकना ।
दो महिलाओं के गले में एक ही ठरकी बंधी हुई है । (संडासोम/)

143. बरिया केड़ाकिङ अरांड़ातकिन चि इसुकिङ सयदेया, अड़अ: तकिन चि काकिङ सयदेअ ।
भैंसों की एक जोड़ी है, जुआट डालने पर लम्बी लम्बी सांस लेती हैं, उतार देने पर सांस लेती नहीं हैं । (चपुवा/धौंकनी)

144. बरिया सगिड़ि मिद् तेगे सोबेन सअः किङ निर बियुरेआ ।
पहियों की एक जोड़ी है, जो सब तरफ एक साथ दौड़ती है ।
(मेद्/आँख)

145. बरिया गे बुटा, गोटा दिसुम नड़िअकना ।
केवल दो ही बुदा है लेकिन उसकी लतर पूरी दुनियां में फैली है ।
(मेद्/आंख)

146. बरिया गे बुटाकना, गोटा दिसुम डबावाकना ।
केवल दो ही बुदा है लेकिन पूरी दुनिया को अपने में समेट लिया है ।
(सिंगि आद् चंडुः/सूर्य और चांद)

147. बर होड़ो जुड़ितेकिन सेनोःअ, मगर काकिङ लेपेला ।
दो व्यक्ति एक ही कतार में चलते हैं पर एक दूसरे को वे देखते नहीं हैं ।
(मेद्/आँख)

148. बर होड़ो होड़ोकिङ जुड़ितेकिङ निरेआ ।
दो व्यक्ति हैं, दोनों एक ही कतार में दौड़ते हैं ।
(सगिड़ि चका/ पहिया)

149. बंड़ासि डाङ टियुल, हाउको पोटोम डाइ ।
जब बनसी का डाङ उठता है, तो देमता की बांधी नीचे गिरता है ।
(गुरिः/गोबर)

150. बलेः रे दोएः दुबा, मता जन ते दोएः गितिःअ ।
बाल्यावस्था में बैठता है, युवावस्था में लेटता है । (केचोः/खपरा)

151. बलेः रे दोएः सेन धड़िअः, मता जनते दो का ।
बाल्यावस्था में चलता फिरता है, युवावस्था में नहीं । (एंड़े/लह)

152. बलेः रे दोएः लिजअः ना, मता जनते दो का ।
बाल्यावस्था में वस्त्र धारण करता है, युवावस्था में निर्वस्त्र रहता है ।
(मद हेलता/बांस की करील)

153. बलेः रे रोन रोन गुचु, हड़म रे गुड़मुहा ।
बाल्यावस्था में लम्बी लम्बी दाड़ी, वृद्धावस्था में दाड़ी का नामो निशान नहीं । (जोनेहर/मकई)

154. बंहडा मंडि लेबेद् तुबिद् ।
मटकी में खाना ठसाठस । (अंड़ि/अंजीर)

155. बाबा सोङतन रे पुइला को ओमाकोअ।
धान नापते समय ग्राहक को पइला थमाया जाता है।
(इलि पुड़ु:/हंड़िया दोना)

156. बितर रे चुकअ:, चेतन रे जिलु।
भीतर मटकी रहता है, बाहर से मांस मढ़ा रहता है।
(सिम अमटा/मुर्गी का अटखोरा)

157. बितर रे जिलु, चेतन रे जङ।
भीतरी भाग में मांस रहता है, बाहरी भाग में हड्डी।
((i) सिम जरोम/अण्डा, (ii) सुटि/गोंघी)

158. बुटातेए: देए:अ, चुटि आतेए: हड़गुना।
नीचे से चढ़ता है, ऊपर से उतरता है। (नकि:/कांघी)

159. बुम्बुइ: हइ पगाए: तोल तना।
चिंगड़ी मच्छली पगाह बांध रही है। (सुई सुतम/सूई और सूता)

160. बुरु जपअ: रे जुड़ि पंखा।
पहाड़ के उभय-पक्ष में जोड़ा पंखा।
(उरि: लुतुर/गाय के कान)

161. बोद् बोद् बकरा गोटा दिसुमए: दांड़ाएअ।
अदना सा बकरा, सारी दुनिया की सैर करता है। (पोएसा/पैसा)

म

162. मअ:तअ:इ, पोटाअ: तअ:इ, तोपा तअ: नि: रअ:एअ।
काटी हुई, खाल खींची हुई, और दफन की हुई आवाज निकालती है।
(डुलकि/ढोलक)

163. मअ: तअ:इ मिंडि तिंगुअकन गेए: तइना।
काट देने पर भी भेड़ खड़ी की खड़ी ही रहती है।
(बाबा नाडा/धान का नाड़ा)

164. मद् चुटि तिनिनिनि।
बांस की छड़ी का अग्रभाग चोखा। (अलचि/अरचि)

165. मयोम दो सिबिला, जिलु दो हड़दा।
खून स्वदिष्ट होता है, मांस तीता लगता है। (मदुकम/महुआ)

166. मिद् बिता गे दारु, एना रेअः गेदेला जो।
एक ही बिता पेड़ होता है लेकिन उसमें भांति-भांति के फल लगते हैं।
(कुम्बर चांक/कुम्हार का चांक)

167. मिंडि दिरिङ ककरा कोकोरो।
भेड़ की सींग खाली खोली। (जोजो/इमली)

168. मियद् उरिः बरिया सेरेङ रेको खोड़ामिइअ।
एक गाय है जिसको दो पत्थरों में पासते हैं। (सिकु/चील्लर)

169. मियद् ओड़अः ते अरअः हड़ा को हर अदेर कोअ, पुंडि हड़ाको हर उड़ुङकोअ।
एक गोहार है जिसमें लाल बैलों को भितारते हैं सफेद बैलों को उससे बाहर निकलते हैं। (कोदे जङ ओड़ोः होलोङ)

170. मियद् ओड़अः रे खिड़की मेनअः, एन खिड़की ते ओड़अः परोमा, ओड़अः रेनको बतिकम एन खिड़की ते काको परोम धड़िअः।
एक घर में खिड़की है; उस खिड़की से घर निकल जाता है, बल्कि घरवाले उस खिड़की से निकल नहीं पाते हैं।
(दअः, जलोम आद हइको/पानी, जाल और मच्छलियाँ)

171. मियद् खरा मोढ़े होड़ो तेको ओताएअ।
एक तरह का पाटा है जिसे पांच व्यक्ति मिलकर चलात्ते हैं।
(नकिः/कांघी)

172. मियद् खसुवा सेता बेटेकनएः सिबिला।
एक खसुहा कुत्ता है, जिसका मांस बहुत स्वदिष्ट होता है।
(सरुपा/सरिपा)

173. मियद् कुड़ि दुअर रेगे गुरिःए गिड़िअ।
एक औरत है, जो दरवाजे पर ही गोबर फेंकती है। (कड़ाकोम/केंकड़ा)

174. मियद् कुड़ि बेगर दुमङ तेगेएः सुसुना।
एक औरत है जो मांदर के बिना ही नाचती है। (चपुआ/धौंकनी)

175. मियद् कुला बरिया उरिःकिङ मोसा तेगेएः ओताकिङा।
एक शेर है जो एक साथ दो बैलों का शिकार करता है। (चपुअ/धौंकनी)

176. मियद् केड़ा गोटा होड़मोएः डाटाकना।
एक भैंस है जिसके सारे शरीर में दांत भरे पड़े हैं। (कंटड़ा/कटहल)

177. मियद् केड़ा बरिया सेरेङए: मयोमेअ।
एक भैंस है जो एक साथ दो पत्थरों को रक्तरंजित करता हैं।

(सिकु/चीलर)

178. मियद् खरा गेल होड़ोतेको रचअ:एअ।
एक पाटा है, जिसे दस व्यक्ति मिलकर खींचते हैं।

(लेए: गेएन तेअ:/जीभी)

179. मियद् होड़ो निदा सिंगि सेनाका गेए: तइना।
एक आदमी है जो दिन रात चलते रहता है।

(घड़ी/घड़ी)

180. मियद् होड़ो तला निदाए: ककलाएअ।
एक आदमी है जो आधी रात को चिल्लाता है।

(हेटेटेंयोद् चेंड़े/हेटेटेंयोद् पंक्षी)

181. मियद् होड़ो सिरमा कटा केआतेए: गिति:अ।
एक आदमी है, जो पैर ऊपर उठाकर सोता है।

(हेटेटेंयोद् चेंड़े/हेटेटेंयोद पक्षी)

182. मियद् होड़ो सिंगि दोए: गिति:अ, निदा दोए: अतिङा।
एक आदमी है, जो दिन को सोता है, रात को चारा खोजता है।

(कोकोर आद् बदुलि/उल्लू और चमगादड़)

183. मियद् होड़ो ओङइ परतेदए: ककलाएअ।
एक आदमी है उसे जितनी बार फूंको उतनी बार चिल्लाता है।

(सिटि/सीटी)

184. मियद् होड़ो जटा कंटीए: जोमेअ, होलोङ लेकाए: बहरेअ।
एक आदमी है जो कांटीली लकड़ियाँ खाता है और आंटा जैसा पखाना करता है।

(सेंगेल/आग)

185. मियद् होड़ोअ: ओड़अ: रे दुअर गे बनो:अ।
एक आदमी है, जिसके घर में दरवाजा ही नहीं है।

(लुमङ/रेश्म)

186. मियद् होड़ो ओड़अ:ए बइ रे दुअर काए: जोगवएअ।
एक आदमी है, जो घर बनाता है तो दरवाजा नहीं रखता है।

(लुमङ/रेश्म)

187. मिद् होड़ो हसा गेए: जोमा, हसा गेए: बहरेअ ।
एक आदमी है जो मिट्टी खाता है और मिट्टी ही पखाना करता है ।
(लेंडद/केंचुआ)

188. मियद् होन गड़ा तअ:ए तेबअ:ए चि हेबे गेए: नामा ।
एक बच्चा है, जो नदी पहुँचते ही गोदी होने खोजता है । (जूता/जूता)

189. मियद् होड़ो कोको: डंडअ:ए गोओ: बड़ाए गेअ ।
एक आदमी है जो हर समय हॉकी डांटा लिये फिरता है ।
(सेता चद्लोम/कुत्ते की पूँछ)

190. मियद् खासी गोटा हातु तेको जोमि रेओ काको चबाइअ ।
एक खास्सी है जिसको पूरा गाँव मिलकर खाते हैं, फिर भी खत्म नहीं होता है । (कुंअ:/कुंआ)

191. मियद् गंडुरेकिन दुबाकना, काकिङ जुपुटिदा ।
एक ही आसन पर बैठते हैं, पर एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते ।
(उरि: दिरिङ/गाय का सींग)

192. मियद् गइ गोटा हातु रेन चुइको नुनुइआ ।
एक गाय है जिसका दूध पूरे गाँव के बछड़े पीते हैं ।
(बड़ाय पसरा/लोहार का भट्ठा)

193. मियद् गेले बाबा ते गोटा ओड़अ: पेरेगो:अ ।
धान की एक ही बाली से पूरा घर भर जाता है । (दिया/दीपक)

194. मियद् दिदि मियद् गेए: अपरोबाकान ।
एक गीध है जिसका एक ही डायना है । (गंड़ि/कोल्हू)

195. मियद् उन्दु रे बरिया बिङकिन उड़ुङओ: बोलो तना ।
एक ही बिल है जिसमें दो साँप निकलते घुसते हैं ।
(जुड़ि तुकु/जोड़ा समट)

196. मियद् कुपुलए: हिजु: अकना, बरिया सुकुरिकिन को गोए: तद्किना ।
कुपुलअ: डाटा बनो:, सुकुरिकिनअ: जङ बनो: ।
एक मेहमान आया है, दो सूअरों का बध किया गया है । मेहमान के मुँह में दाँत नहीं है, सूअरों के शरीर में हड्डी नहीं है ।
(बले: होन आद् बरिया एंगा तोवा
/नवजात शिशु और माँ के दो स्तन)

197. मियद् गे दारू मेनअः, मिमियद् कोतो रे सकम मेनअः। मिमियद् सकम रअः जुदा जुदा नुतुम।
एक ही पेड़ है, उस पेड़ की प्रत्येक डाली में पत्ते हैं। एक एक पत्ते का अलग अलग नाम है। (मिद् सिरमा, गेलबर चंडुः अठाउरि रे नमोः तन दिन रेअः नुतुमको)

198. मियद् चिः चिः चेंड़े गोटा दिसुमए मसकलेअ।
एक छोटी सी चिंड़िया है जो पूरी दुनिया को रोशन करता है।
(दिया/दीपक)

199. मियद् जम्बुड़ि बिङको नुनु पेरेः तअःइअ।
एक डोंड़ सांप है जिसके दोनों तरफ केवल स्तन ही स्तन है।
(ओड़अः भंडिया/)

200. मियद् जंतु चअःलोम रेएः मेदाकना।
एक जीव है, जिसकी पूँछ में उसकी आँख है। (मरअः/मोर)

201. मियद् डेचुवा बरिया कोलोमएः होरोएअ।
एक डेचुवा दो खलिहानों की रखवाली करता है।
(उरिः चद्लोम/गाय की पूँछ)

202. मियद् डुंडु बिङ बरन सअः रेएः बोओःअकना।
एक धमना सांप है, जिसके उभय पक्ष में सिर है। (भंडिया/धुरी)

203. मियद् जो जरोम रे जोजोअ, सोया रे हेंड़ेमा।
एक फल है, जो पकता है, तो खट्टा लगता है, सड़ता है तो मीठा लगता है। (चटनि/चटनी)

204. मियद् तोवा रे मोद् पुरअः होनको मोसा तेको नूनू तना।
एक ही स्तन से बहुतेरे बच्चे एक साथ दूध पीते हैं।
(बड़य पसरा/लोहार का भट्ठा)

205. मियद् दारु रे हेंदे ते हेंदे चटुको हका पेरेः अकना।
एक पेड़ है जिसमें काले काले घड़े भरे पड़े हैं।
(जरोम कुदा/पकल जामुन)

206. मियद् दारु रे सुई गे सुई।
एक पेड़ में केवल सूई ही सूई।
(फुटकल मोए/फुटकल की कली)

207. मियद् दारु रे सुंड़ि: हइ गे हइ ।
एक पेड़ में केवल चिंगड़ी ही चिंगड़ी ।
(फुटकल मोए/फुटकल की कली)

208. मियद् दारु रे चुकअ: गे चुकअ: ।
एक पेड़ में केवल मटकी ही मटकी । (सिंजु जो/बेल का फल)

209. मियद् दारु रे आता गे आता ।
एक पेड़ में केवल लावा ही लावा । (कोरोंजो बा/करंज का फूल)

210. मियद् दारु रे नकि: गे नकि: ।
एक पेड़ में केवल कांघी ही कांघी । (कोरोंजो जो/करंज का फल)

211. मियद् दारु रे पुइला गे पुइला ।
एक पेड़ में केवल पइला ही पइला । (सिंजु जो/बेल का फल)

212. मियद् दारु रे बिण्डा गे बिण्डा ।
एक पेड़ में केवल नेटो ही नेटो । (जोजो जो/इमली का फल)

213. मियद् दारु रे होलद् गे होलद ।
एक पेड़ में केवल अस्तूरा ही अस्तूरा । (मनल जो/सेम का फल)

214. मियद् दारु रे मियद् गे सकम ।
एक पेड़ में केवल एक ही पत्ता । (झंडि/झंडा)

215. मियद् दारु रे कड़द् गे कड़द् ।
एक पेड़ में केवल कड़द ही कड़द ।
(मुनगा जो/सहिजान का फल)

216. मियद् पुड़ु: रेअ: गंगाइ अता कम लेका धड़िअ: ।
एक दोने में रखे हुए गंगाइ के दानों को तुम गिन नहीं सकते ।
(इपिलको/तारेगण)

217. मियद् पुंडि सिम होरा होरा तेको तुद् इदिअ ।
सफेद रंग की एक मुर्गी है जिसके पंखों को भर रास्ता उखाड़ते जाते हैं ।
(बेए:/थूक)

218. मियद् पुंडि सुकु का चोपाकना ।
एक सफेद लौकी है जिसकी कोई टहनी नहीं होती है ।
(सिम जरोम/मुर्गी अण्डा)

219. मियद् बाबा दारु रे को हेरेअ।
धान की एक फसल है जिसे पेड़ों में बोई जाती है। (एंड़ेको, एको/लह)

220. मियद् बुढ़िया कुडम कुडम ते तोरोए: हेर बियुरेया।
एक बुढ़िया है जो घर के किनारे किनारे राख छींटते जाती है।
(जनृति आद् होलोङ/जांता और आंटा)

221. मियद् बुरु रेअ: मद का उटिअकना।
एक पहाड़ है, जिस पहाड़ के बांस में गांठ ही नहीं होते। (ऊब्/बल)

223. मियद् बिङ बरन सअ:ए बोओ: अकना।
एक सांप है जिसके उभय पक्ष में सिर है। (मरांड़ा/बहिंगा)

224. मियद् बिर रे मिद् रकम रेअ: गे दारु मेनअ:।
एक जंगल है, जिसके सभी पेड़ एक ही प्रजाति के हैं।
(ऊब्/बाल)

225. मियद् दोरेया रे मरङ खूंटा बिदाकना। एना चेतन रे ओड़अ: बइअकना।
एनडे इसु पुरअ: खुरजि दोअकना। खुरजि लोओ:अ ओड़अ: दो का।
एक समुद्र है, उसमें बड़ा-सा खूंटा गड़ा हुआ है, खूंटे के ऊपर घर है।
घर में बहुत सारी सम्पत्ति है। सम्पत्ति तो जल जाती है पर घर नहीं जलता है। (हुका/हुक्का)

226. मियद् भंइसिअ: कटा बनो:।
एक भैंस है पर उसका पैर नहीं है। (बिङ/सांप)

227. मियद् मनचि रे उपुन होड़ोको दुबा, काको जुपुटिदा।
एक मचिया में चार व्यक्ति साथ-साथ बैठते हैं, पर एक दूसरे को वे छूते नहीं है। (गइ तोवा/गाय का थन)

228. मियद् महरा पुंडि गेए: गोट कोअ।
एक चरवाह है जिसकी गोठ में केवल सफेद पशु ही रहते हैं।
(मंदुकम/महुआ)

229. मियद् मिंडि चद्लोम रेको खुंटाड़ा तअ:इअ।
एक भेड़ है जिसको पूंछ में खूंटते हैं। (कंटाड़ा/कटहल)

230. मियद् सुकु ते बरिया टुइला बइओ:अ।
एक लौकी है जिससे एक जोड़ा टुइला बनाया जा सकता हैं।
(बरु/कुसुम)

231. मियद् हड़ा मियद् बुनुमए: जल बियुरेअ।
एक बैल है जो बाम्बी को चाटते हुए घूमता है।(बोओ: नकि:/कांघी)

232. मियद् हेटेटेंयोद अपारोब रेए: जरोमेअ।
एक हेटेटेंयोद पक्षी है जो अपने पंखों में अण्डे देती है।
(मेरल जो/आंवले का फल)

233. मियद् हाति दुवर ते गोटा होड़ोमोए: परोम जना, बतिकम चद्लोम रेए: टेकद् जना।
एक हाथी है जो सशरीर दरवाजे से निकल गया, पर उसकी पूँछ अटक गई। (रिंड़ि/ऋण)

234. मियद् हातु रेन कुड़िको गुचुअकन होन को हताराना।
एक गाँव की औरतें दाड़ियल बच्चों को बेतरायी हैं।
(जोनेहर/मकई)

235. मियद् होड़ो मंडि जोम तन रे इतिल गेए: असिया।
एक आदमी है जो भात खाते समय चर्बी ही मांगता है।
(बुलुङ/नमक)

236. मियद् होड़ो सेतअ: रेए: उनुमेना, तिकिन एनङए: उड़ुङओ:अ।
एक आदमी है जो भोर को डुबकी लगाता है दोपहर को बाहर निकलता है।
(पाल/फार)

237. मियद् होड़ो ओड़अ: तेदो हपे हपेए: सेनो:अ, पिड़ि रेदोए: ककलाएअ।
एक आदमी है, जो घर से तो चुपचाप निकलता है, पर बाहर जाते ही चिल्लाने लगता है। (कोंडे:/टांगिया)

238. मियद् होड़ो जांते जेताते सेनो: रेको चपुतुकाइअ।
एक आदमी है जिसको घर से निकलते समय लोग़ छूकर निकलते हैं।
(दुअर/दरवाजा)

239. मियद् होड़ो गंडु बेगर काए: दुब धड़िअ:।
एक आदमी है जो पीड़हा के बिना बैठ नहीं सकता है।
(इलि चला/हंड़िया छकनी)

240. मियद् होड़ो सबोड़ोको गेए: हका बियुरेना।
एक आदमी है जो शरीर में केवल सबड़ टांगे रहता है।
(हरि जो/बंदर लौरी का फल)

241. मियद् होड़ो अयर तयोम मिद् गेए: लेलो:अ।
एक आदमी है, जो आगे पीछे एक ही दिखता है।
(लिजअ:/कपड़ा)

242. मियद् होड़ो देया सअ: रेए: डाटाकना।
एक आदमी है जिसकी पीट में दाँत है। (पटि/चट्टाई)

243. मियद् होड़ो सेतअ: रेको जोअरिअ।
एक आदमी है जिसको लोग सुबह होते ही प्रणाम करते हैं।
(डाड़ि/चुंआ)

244. मियद् होड़ो ओड़अ: रे दोए: जकोएअ, पीड़ि रे दोए: बीओ:अ।
एक आदमी है जिसका पेट घर में खाली रहता है, बहर जाता है तो भर जाता है। (अअ: /धनुष)

245. मियद् होड़ो गोटा गड़ा रअ: दअ:ए नू चबाएअ।
एक आदमी है जो पूरी नदी का पानी पीकर खत्म कर सकता है।
(कुमुनि/कुमनी)

246. मियद् होड़ो गड़ा जपअ: तेबअ: के चि हेबेइञ्मे अबाए: मेनेअ।
एक आदमी है जो नदी पहुँचते ही अपने बाप से गोद में लेने के लिए निवेदन करता है। (जूता/जूता)

247. मियद् होड़ो जां रेगे गुयुइ तुरुबेया।
एक आदमी है जो कहीं पर भी अपना कुम्भा खड़ा कर लेता है।
(सेता/कुत्ता)

248. मियद् होड़ो मोढ़े मुकाए: गुचुवाकना।
एक आदमी है जिसकी दाड़ी पांच हाथ लम्बी होती है।
(इचअ:हइ/चिंगड़ी मच्छली)

249. मियद् होड़ो सेतअ: रे बअ: गा बअ: गाए: मेनेअ।
एक आदमी है जो सुबह होते ही मांस माँगता है। (अलचि/अरचि)

250. मियद् होड़ोअ: बोओ: बनो:अ।
एक आदमी है जिसका सिर नहीं होता है। (कड़ाकोम/केंकड़ा)

251. मियद् होड़ो सेतअ: रेए: रेड़ाना अर ढेलका बुरु रेए: दुबा।
एक आदमी है जो भोर को नहाता है और ढेलका पहाड़ की चोटी पर आसन ग्रहण करता है। (दअ: चटु/घड़ा)

252. मियद् होड़ो बुउः अकन गंडु रेएः दुबा ।
एक आदमी है जो छेद्वाले पीड़हा में बैठता है । (चटु/घड़ा)

253. मियद् होड़ो अपिया बोओः रेएः दुबा ।
एक आदमी है जो तीन सिरवाले आसन पर बैठता है । (चटु/घड़ा)

254. मियद् होड़ो सेतअः रे को जोमिअ ।
एक आदमी है जिसे लोग नित्य सुबह खाते हैं । (करकद्/दातुन)

255. मियद् होड़ो सेतअः दो उपुनिया, तिकिन दो बरिया, अर अयुब-अयुब दो अपियाएः कटाओःअ ।
एक आदमी है जो सुबह को चार पैर से, दोपहार को दो पैर से, और सांझ को तीन पैर से चलता है । (होड़ो/आदमी)

256. मियद् होड़ो उनुमेन जनते काएः नमोःअ ।
एक आदमी है जो डुबकी लगाने के बाद खो जाता है । (बुलुङ/नमक)

257. मियद् होड़ो दिन मुंडि तेबअः जनचि गुतु सार गेएः बइअ ।
एक आदमी है जो नियत समय आते ही नुकीले तीर बनाने में जुट जाता है ।
(फुटकल/फुटकल)

258. मियद् होड़ोअः बोओः आद् कटा बनोःअ ।
एक आदमी है जिसका सिर और पैर नहीं होता है । (सोनोः/कमीज)

259. मियद् होड़ो जोम दोएः धड़िअ, पिड़िसअः दो काएः धड़िअः ।
एक आदमी है जो खाने सकता है पखाना करने नहीं सकता है ।
(कुमुनि/कुमनी)

260. मियद् होड़ो होलोङ गेएः हताएअ ।
एक आदमी है जो आंटा ही उगलता है । (जनता/जाता)

261. मियद् होड़ो रअःकन गेएः तइना ।
एक आदमी है जो हरदम रोते रहता है । (घड़ी/घड़ी)

262. मियद् होड़ो जेता इमतङ काएः दुड़ुमा ।
एक आदमी है जो कभी सोता नहीं है । (घड़ी/घड़ी)

263. मियद् होड़ो मोचा तेगेएः जोमेअ, मोचा तेगेएः परकासअः एअ ।
एक आदमी है जो मुँह से खाता है और मुँह से ही पखाना करता है ।
(तोन्ड़ा/तोन्ड़ा)

264. मियद् होड़ो अपियाए: तोवाकाना।
एक आदमी है जिसके तीन स्तन होते हैं। (चूल्हा/चूल्हा)

265. मियद् होड़ो जेता सअ: सेनो: रे काए: बागेअ।
एक आदमी है जो कंहीं भी जाओ तो वह पीछा नहीं छोड़ता है।
(उम्बुल/छाया)

266. मियद् होड़ो चुटा रे सब कीरेए: केचेर बियुरेना।
एक आदमी है जिसकी चोटी पकड़ लो तो वह चक्र काटने लगता है।
(जंति/जांता)

267. मियद् होड़ो सेतअ: रेको थबअ: इअ।
एक आदमी है जिसको सुबह लोग पटकते हैं। (सुलि:/सीतर)

268. मियद् होड़ो तला लाई: रेए: डाटाकना।
एक आदमी है जिसका बीच पेट में दांत रहता है। (कुमुनि/कुमनी)

269. मियद् होड़ो अरअ: गड़ाए: खरा तना।
एक आदमी है जो लाल दोहार में पाटा चला रहा है। (लेए:/जीभ)

270. मियद् होड़ो ओड़अ:ए इदि बियुरेअ।
एक आदमी है जो अपने घर को लिये फिरता है।
(i) होरो/कछुवा (ii) सुटि/गोंघी।

271. मियद् होड़ोको दल मरङइअ।
एक आदमी है जिसको लोग पीट पीटकर बड़ा करते हैं।
(चटु/घड़ा)

272. मियद् होड़ो फदा कीरेए: हु:करएअ।
एक आदमी है जो लात मारने पर गरजता है। (डिंकि/डेंकी)

273. मियद् होड़ो कुड़म रे दो लीरेए: रअ:एअ।
एक आदमी है, जिसको छाती से लगाओ तो रोता है।
(टुइला/टुइला)

274. मियद् होड़ो मोचा तेए: सेनेअ।
एक आदमी है जो मुँह के बल चलता है। (सुटि/गोंघी)

275. मियद् होड़ो मयङ रे कोको: उडअ: तोड़ेअका गेए: तइना।
एक आदमी है जो हरदम कमर में हॉकी डंटा लिये फिरता है।
(सेता-चद्लोम/कुत्ते की पूंछ)

276. मियद् होड़ो सबि लोओ: गेए: सुसुना।
एक आदमी है जो हाथ लगाते ही नाचने लगता है। (जोनो:/झड़ू)

277. मियद् होड़ो कोदेए: जोमेया आद् पुंडि गेए: हताएअ।
एक आदमी है, जो मड़ुवा खाता है और सादा सादा उगलता है।
(जंति/जांता)

278. मियद् होड़ो जिलुते सकमए: पोटोमएअ।
एक आदमी है, जो मांस से पत्ती बांधता है। (रेला सकम/ताड़ का पत्ता)

279. मियद् होड़ो लुतुर सब ली रेए: ककलाएअ।
एक आदमी है जिसका कान पकड़ो तो वह चिल्लाता है।
(बंदुकु रेअ: घोड़ी केड़ेद्/बंदूक का घोड़ा छूना)

280. मियद् होड़ो हिजु: तन दो काए: लेलो:अ, सुसुन तन दोए: लेलो:अ।
एक आदमी है, जो आते हुए दिखता नहीं है, नाचते हुए दिखता है।
(होयो/हवा)

281. मियद् होड़ो गोए: जन रेओ मेदाकन गेए: तड़ना।
एक आदमी है जिसकी आँखें मरने के बाद भी खुली ही रहती है।
(हइ/मच्छली)

282. मियद् होड़ो चद्लोम ते दअ:ए नूएअ।
एक आदमी है जो पूंछ के बल पर पानी पीता है। (हाथी/हाथी)

283. मियद् होड़ो हड़म जन रेए: बले: रुड़ाओ:अ।
एक आदमी है जो वृद्धावस्था में बाल्यावस्था को प्राप्त करता है।
(बिङ/सांप)

284. मियद होड़ो सिम को रअ: तेए: ककलाएअ।
एक आदमी है जो मुर्गा बांगते ही चिल्लाने लगता है।
(कुंआ डाङ/टेढ़ा डांङ)

285. मियद् होड़ो बले: रेदो एसेल गेए: तड़ना, दंगड़ा रे दोए: हेंदेओ:अ, आद् हड़म जनतेए: एसेल रुड़ाओ:अ।
एक आदमी है, जो बाल्यावस्था में गोरा रहता है युवावस्था में काला और वृद्धावस्था में वह फिर गोरा हो जाता है।
(डाउ बा, डाउ जो ओड़ो: डाउ जरोम/
बड़ाहर का फूल, फल और पका हुआ फल)

286. मियद् होड़ो जोम लेआतेए: उला उड़ुङएअ।
एक आदमी है जो खाने के बाद उसे उगल देता है। (बदुलि/भादुल)

287. मियद होड़ो लाई: तेए: सेनेअ।
एक आदमी है जो पेट से चलता है। (बिङ/सांप)

288. मियद् होड़ो सार गे सारए: हकाकअ:।
एक आदमी है जो अपने शरीर में केवल तीर ही टांगे रहता है।
(ताड़ दारु/ताड़ का पेड़)

289. मियद् होड़ो मियद् बुरुए: ओङ परोमेअ।
एक आदमी है जो पहाड़ के एक छोर से दूसरे छोर तक फूंक मार कर हवा पार करता है। (चपुआ/धौंकनी)

290. मियद् होड़ोअ: कटा का लेल धड़िओ:अ।
एक आदमी है जिसका पैर दिखाई नहीं देता है। (लिंडुङ/सत गोड़वा)

291. मियद् होड़ो लतर रेए: मुंदमाकना।
एक आदमी है जो शरीर के अधो-भाग में अंगूठी पहनता है।
(जोनो:/झाड़ू)

292. मियद् होड़ो नकि:ए बातदा।
एक आदमी है जो कांघी खोंसकर रखता है।
(कोरोंजो जो/करंज का फल)

293. मियद् होड़ो डाटा रेए: गुचुवाकना।
एक आदमी है जिसकी दांतों में उसकी दाड़ी होती है।
(जोन्डा कपु/मकई भुट्टा)

294. मियद् होड़ो जनमो: तेरअ: गोजो: हुलङ जकेद समा होड़मो गेए: गिति:अ।
एक आदमी है जो अजीवन (जन्म से मरने तक) खाली बदन ही सोता है।
(सिराए:/बघेरी)

295. मियद् होड़ो गड़ा गड़ा तेए: रअ: बड़ाएअ।
एक आदमी है, जो नदी के रास्ते रोते फिरता है।
(चांड़/पानी छींटने का एक टीन जो रस्सी से दोनों तरफ बंधा रहता है)

296. मियद् होड़ोअ: जङ, जिलु ओड़ो: मयोम बनोगा मेनदो गोटा दिसुमए: होनोरा।
एक आदमी है जिसका ना तो हड्डी है ना तो मांस है और नाही शरीर में खून है, लेकिन वह पूरी दुनिया की सैर करता है। (सेंगेल/आग)

297. मियद् होड़ो गोटा दिसुम रअः खुरजिएः जोम चबाए रेओ काएः बीओःअ ।
एक आदमी है जो सारी दुनिया का रसद खा भी जायेगा, तौभी उसका पेट नहीं भरेगा । (सेंगेल/आग)

298. मियद् होड़ो बुरु रे हिगि हिगि कुम्बाएः बइअकदा ।
एक आदमी है जिसने पहाड़ में कुम्मा बनाया है ।
(डइर डेगा बिङ/डाल डाल डेगनेवाला सांप)

300. मियद् होड़ोअः सयद् ते मेड़ेद् सेरोःअ ।
एक आदमी है जिसकी श्वासन क्रिया से लोहा गलता है ।
(चपुआ/धौंकनी)

301. मियद् होड़ो हेजे हेजे रेएः कोलोमाकदा ।
एक आदमी है जिसका खलिहान पहाड़ की ढलान पर है ।
(खरपट/)

302. मियद् होड़ो हेजे हेजे रे गुयुःए तुरुबाकदा ।
एक आदमी है जिसका कुम्भा पहाड़ की ढलान पर अवस्थित है ।
(मुं/नाक)

303. मियद् होड़ो तला लाईः रेएः नोतोवाकना ।
एक आदमी है जिसने बीच पेट में नख पहन रखा है । (जोनोः/झाड़ू)

304. मियद् होड़ो राजाअः पुकुरि रे सलुकिद डेबेल तना ।
एक आदमी है जो राजा के पोखरे में कमल नहा रहा है । (बा/फूल)

305. मियद् होड़ो अपियाएः कटाकना ।
एक आदमी है जिसके तीन पैर हैं । (जूला/चूल्हा)

306. मियद् होड़ो जेटे सिंगि तेबअः जन चि सूईको गेएः अकिरिङअ ।
एक आदमी है जो गर्मी आते ही, सूईयां बेचने लगता है ।
(फुटकल मोय/फुटकल की कली)

307. मियद् होड़ो गोटाएः पुंडि गेअ ।
एक आदमी है, जिसका सारा शरीर उजला है ।
((i) लिजअः/कपड़ा (ii) कागज/कागज)

308. मियद् होड़ो जेटे सिंगि दोको थेर गिड़िअ, जरगि दअः दोको हलङ अगुइअ ।
एक आदमी है जिसको जेठ में बिथारते हैं बरसात में भीतारते हैं ।
(बाबा/धान)

309. मियद् होड़ो बतिरि केड़ेद् ली रेगेए: एपेरङअ।
एक आदमी है जो छूते साथ झनझनाने लगता है।
(जिंड़िं जो/सनई का सूखा फल)

310. मियद् होड़ो उड़ुङओ: बोलो: को जोअरीअ।
एक आदमी है जिसको निकलते घुसते लोग प्रणाम करते हैं।
(दुअर/दरवाजा)

311. मियद् होड़ो दअ:ए बोरोअ:।
एक आदमी है जो पानी से डरता है। (जूता/जूता)

312. मियद् होड़ो सिंगि दोए: गिति:अ, निदा दोए: कमिअ।
एक आदमी है, जो दिन को सोता है रात को कमाता है। (कोकोर/उल्लू)

313. मियद् होन जुटिदि लोओ: गेए: रअ:एअ।
एक बच्चा है जो छूते साथ रोता है। (बुसु:/पुआल)

314. मियद् होन नूनुइ रेदोए: रअ:एअ, कम नूनुइ रेदोए: गिति:अ।
एक बच्चा है, दूध पिलाओ तो रोता है, नहीं पिलाओ तो सोता है।
(पेरेंड़ेद्/शहनाई)

315. मियद् होड़ो निदा दोए: लेलेअ, सिंगि दो काए: लेलेअ।
एक आदमी है जिसको रात में दिखाई देता है, दिन में दिखाई नहीं देता है।
(कोकोर/उल्लू)

316. मोढ़े होड़ो तेको सीअ, गेल होड़ो तेको खराएअ।
पांच व्यक्ति मिलकर जोतते हैं दस व्यक्ति मिलकर पाटा चलाते हैं।
(करकद आद गेए:न तेअ:/दातुन और जीभी)

317. मोढ़े होड़ो हगेया मोसा ते मियद् चेपेद् लता रेको बोलोअ।
पाँच भाई एक ही साथ एक चिपटे खोह में घुसते हैं।
(मियद् ती रअ: कटु: आद मोचा/एक हाथ की ऊँगलियां और मुँह)

318. मियद् चि: चि: चेंड़े मोद् डुबाए: जिलुइअ।
एक छोटी सी चिड़ियाँ है जो एक डूबहा मांस करती है।
(पनासु/डिबरी)

319. रचा तला रे सिपि मइए: दुबाकना।
बीच आंगन में सीपि बेटी बैठी हुई है। (सिमइ:/मुर्गी का मल)

र

320. राजाकोअ: रानिकोअ: जांक कम देए: धड़िअ: ।
राजा रानी के द्वारा लगाए हुए बाड़े में तुम चढ़ नहीं सकते हो ।
(सुकुल/धूँआ)

321. राजाअ: चेतन रे घासीए: दुबाकना ।
राजा के ऊपर घासी बिरजमान है । (सोसो/भेलवा)

322. मियद् राजा बा चेड़ें मियद् कुंआ रेअ: दअ: नूएआ ।
एक राजा बा पक्षी (हॉमिग बार्ड) एक कूंए का पानी पी जाता है ।
(दिया/दीपक)

323. मियद् राजा बा चेंड़े गोटा ओड़अ:ए मसकलएअ ।
एक राजा बा पक्षी (हॉमिग बार्ड) पूरे घर को रोशन करता है ।
(दिया/दीपक)

324. राजाअ: बोओ: रे बड़ाय दुबाकना ।
राजा के सिर पर लोहार बिरजमान है । (सोसो/भेलवा)

325. राजा रानिकोअ: बोतोए: कम मुका धड़िअ: ?
क्या राजा रानी का करेया तुम माप सकते हो ? (संडका/सड़क)

326. राजा रानिकोअ: देयाम देए: धड़िअ: ?
क्या तुम राजा रानी की पीट पर चढ़ सकते हो ? (पचिरि/दीवार)

327. राजा रानिकोअ: पेटी का ओटागो:अ ।
राजा रानी का पेटी खुलता नहीं है । (हतनअ: जो/डंवठा का फल)

328. राजा रानिकोअ: चुअ: कम तीङ धड़िअ: ।
राजा रानी का चुआल तुम उठा नहीं सकते हो । (मुई: हेयोल/)

329. राजा रानिकोअ: मरचि ओकोए गोद् धड़िअ: ?
राजा रानी का मिर्चाई कौन तोड़ सकता है ? (तुम्बुलि दा/बर्रे के अण्डे)

330. राजा रानिकोअ: पोटोम ओकोए तिरिङ धड़िअ: ।
राजा रानी का मोरा एक के ऊपर दूसरा कौन रख सकता है ?
(सिम जरोम/मुर्गी के अण्डे)

331. राजा रानिकोअ: हटअ: मियद् गे कूंड़ुवाकना ।
राजा रानी के सूप का एक ही कोना होता है ।
(अंड़ि सकम/डूमर की पत्ती)

332. राजा रानिकोअः चरिःम चटअः धड़िअः ?
क्या तुम राजा रानी की सींक फाड़ सकते हो ? (ऊब्/बाल)

333. राजा रानिकोअः ओड़अःम जोओः धड़िअः ?
क्या तुम राजा रानी के घर की सफाई कर सकते हो ? (डड़का/चरनी)

334. रितिपिति सकमोःअ, गुगुरा लेका जोओःअ ।
छोटा छोटा पत्ता रहता है गुंघरु जैसा फलता है । (मोरोएःजङ/चना)

335. रितिपिति सकमोःअ, कड़द लेका जोओःअ ।
छोटा-छोटा पत्ता रहता है कड़द् जैसा फलता है ।
(मुनगा जो/सहीजान का फल)

336. रिसा सिमअः जिलु रे'बेद् गेअ ।
रिसा मुर्गी का मांस दांत में ही फंसता है ।
(मुनगा जो/सहीजान का फल)

337. रुपा रेन चेंड़े, सोना रेअः ठोर, मेन्दो चअःलोम ते दअःए नूएअ ।
चांदी की पंक्षी है, सोने की चोंच है, लेकिन वह पूंछ से पानी पीता है ।
(पनासु/डिबरी)

338. लुमङ लिजअः थइलअः रे हय हय मेनोः जङ ।
रेशमी कपड़े की थैली में हय-हय के बीज । (मरचि/मिर्चाई)

339. रोओः तअःइ सिमएः ककारदा ।
छेद देने पर भी मुर्गी चिल्लाती है । (टरकी/ठरकी)

340. रोड़ो डुटु दल लेरे बुदु हइको निर उड़ुङओःअ ।
लकड़ी का ठूंठ बजाने पर बुदु मच्छलियाँ निकलती हैं । (ढांका/ढांक)

341. रोड़ो दारु चेतन रे कोओःए दुबाकना ।
सूखी लकड़ी पर बगुला बैठा है । (कपि/भलुवा)

342. रोड़ो दारु बटि जन रे सिपई को हिजुःअ ।
सूखा पेड़ जब गिरता है तो तुरन्त सिपाही चले आते हैं ।
(इःइ ओड़ोः रोकोको/मल और मक्खियाँ)

ल

343. लंगड़ा महत्तो कुंआएः गेलेः तना ।
लगड़ा महत्तो कुंए की खुदाई कर रहा है । (कड़कोम/केंकड़ा)

344. लेढ़ी लेढ़ी अड़िए: थपअ: तना।
लेड़हा मेड़ बाँध रहा है। (सूई सुतम/सूई और सूता)
345. लोर बितर रे अंगि मंइए: लंदा तना।
गड्डे के अंदर अग्नि कन्या मुस्कुरा रही है। (सेंगेल/आग)

स

346. सकम रेअ: पोटोम जिलु रे हकाकना।
पत्ती की पोटली है वह मांस में लटक रहा है।
(रेला सकम रअ: तड़कि/ताड़ के पत्ती का कर्ण फूल)
347. सगिड़ि उनुडु मोयोङ मेयोङ।
चांक का छेद म्याउँ म्याउँ। (पुसि/बिल्ली)
348. सिंङ चुटि मद् बोंगा डुल डुल।
पेड़ की चोटी पर गोल मटोल देवता। (सिंजु/बेल का फल)
349. सिंगि कुंवाए: निदा बिंवाए:।
दिन को मोड़ते हैं, रात को बिछाते है। (पटि/चट्टाई)
350. सिम पेटो: बेर बेर।
मुर्गी का अण्डा चक्र काटते हुए गिरता है।
(सरजोम जो/सखुवे का फल)
351. सिरमा रेए: गोंट कोअ, ओते रेए: उडरकोअ।
आसमान में जमा करता है जमीन में निकालता है।
(मदुकम/महुआ)
352. सिरमा रेको रुजदा, ओते रेको सुसुन तना।
आसमान में बाजा बजा रहें हैं, जमीन में लोग नाच रहे हैं।
(कोरोंजो दल/करंज पीटना)
353. सुनुम चुकअ: जुर जुर।
तेल की मटकी झर-झर। (उरि:मुं/गाय का थोथन)
354. सुंड़ि: हइ बंदाए: तोलेअ।
चिंगड़ी मच्छली बांध बंधती है। (सूई/सूई)
355. सुर बुडु बुडु ढुंपा नयल।
सुर-सुराता हुआ बोथड़ हल जमीन में धंसता है।
(सुकुरि मोचा/सूअर का थोथन)

356. सेतअः रे जिलु गेद् तेएः सेनोःअ, तिकिन एनङए हिजुःअ।
भोर को मांस काटने जाता है, दोपहार को वापस लौटता है।
(सियुःनिः/हल जोतनेवाला)

357. सेनोः तन रेएः उंगुदेना, हिजुः तन रे सिरमा सअःए चाबाकअः।
जाता है झुकते हुए, आता है आसमान ताकते हुए। (दअः चटु/जल-पात्र)

358. सेनोः दोम सेनोः तना गउइः तुकाइञ् में।
तुम जा तो रहे हो, मुझे हाथ देते जाओ। (दुअर/दरवाजा)

359. सेनोः दोएः धड़िअः हिजुःदो काएः धड़िअः।
जाने सकता है, आने नहीं सकता है। (सार/तीर)

360. सेनोः दोम सेनोः तना लुतुर होड़ेयद् तुकाइञ् में।
तुम जा तो रहे हो, मेरा कान ऐठंते जाओ। (तला/ताला)

361. सिरमा रे पिलिद, ओते रे ढीप।
आसमान में चमकता है, जमीन में बजता है। (कुदलम/कुदाल)

362. सेनोः तन रे समा लाईः, हिजुः तन रे लाईः पेरेः।
जाता है पेट खाली करके, आता है पेट भरके। (दअः चटु/जल-पात्र)

363. सेबेः सेबेः दअः रे लिंडा हइएः ओबोराकना।
सतह-भर पानी में लिण्डा मच्छली लेटी हुई है। (लेएः/जीभ)

364. सेबेः सेबेः दअः रे चिरपी हइ उटुल पुटुल।
सतह-भर पानी में पोटी मच्छली छटपटाती है। (लेएः/जीभ)

365. सेड़ेः पुकुरि रे चंडुः गरगर।
छोटा सा पोखरा है उसमें पूर्णिमा का चांद दिखाई देता है।

366. सोबेन जाति हेड़े जना, मियद् जाति का हेड़े जना।
हर जाति में थोथा है, एक जाति में थोथा नहीं है।
(डोला, कुंइडि/महुआ का फल)

367. सोबेन सअः रेअः नड़ि मिद् तअः रेगे टुंडुवाकना।
चारों तरफ से आनेवाली लतर एक ही जगह मिलती है।
(पीटि/बाजार)

368. सोरोङ पोतोङ मगन राय दुब काएः धड़िअः।
जूठा मुखवाला मगन राय बैठ नहीं सकता है।
(इलि चला/हंड़िया छाननेवाला पात्र)

ह

369. हकाकनअः हकाकना, तोपाकनअः तोपाकना ।
जो टंगा है सो टंगा ही है जो गड़ा है सो गड़ा ही है ।

(अरु/अरु)

इनुङको हकव दुरङ

गर्मी के मौसम में सांझ के समय बच्चे एक खेल खेलते हैं जिसका नाम है हरहूंच। इस खेल में भाग लेने के लिए बच्चे अपने-अपने घरों से निकलते हैं। इस समय ये खेल के प्रतिभागियों को गीत गा-गाकर खेलने के लिए आमंत्रित करते हैं और जो खेल में भाग लेना नहीं चाहते हैं उनसे जुर्माना वसूलने का भी एलान करते हैं -

यथा - इनुङको दो इनुङगे,
काको दो मोद् पएसा डंडे।

अर्थात् खेलनेवाले खेलाड़ी खेलेंगे, नहीं खेलनेवाले खेलाड़ी एक पैसे का दण्ड भरेंगे।

कहीं-कहीं पर इस आमंत्रण गीत को कुछ इस रूप में भी गाया जाता है-

इनुङको दो इनुङगे,
काको दो कागे।
चेतन टोला, लतर टोला;
मुन्गा साड़े रे,
मोद् पएसा डंडे।

याने खेलनेवाले खेलाड़ी को खेलने दो, नहीं खेलनेवाले खेलाड़ी को छोड़ दो। ऊपर टोले के खेलाड़ी, नीचे टोले के खेलाड़ी, सहिजान के पेड़ों की पंक्ति में उनको एक पैसे का दण्ड भरने दो।

इस खेल में सभी खेलाड़ी पहले एक कतार में खड़े होते हैं। तब टीम गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। कतार में खड़ा कोई एक वरिष्ठ खेलाड़ी इस प्रक्रिया को अंजाम देता है। वह कतार में खड़े एक-एक खेलाड़ी को क्रमशः बायीं और दांयीं ओर खिसकाते जाता है। अंत में बायीं ओर के खेलाड़ियों का एक टीम और दांयी ओर के खेलाड़ियों का दूसरा टीम गठित हो जाता है।

टीम गठन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद खेल आरम्भ की जाती है। खेल कभी आम सहमति से तो कभी टोस के जरिये प्रारम्भ होती है। यदि खेल टोस से आरम्भ होती है तो जो टीम टोस हारती है उस टीम को पहले कतार में खड़ा होना पड़ता है और जो टीम टोस जीतती है उस टीम के खेलाड़ी टोस हारनेवाले खेलाड़ियों को चुनौती देते हैं। यदि आम सहमति से खेल आरम्भ होता है तो एक

टीम के खेलाड़ी स्वेच्छा से कतार बनाते हैं और दूसरी टीम के खेलाड़ी उनको चुनौती देते हैं।

जब खेल आरम्भ हो जाता है तो चुनौती देने वाली टीम का एक खेलाड़ी कतार में खड़े खेलाड़ियों के निकट जाता है और वह उनको छूने के लिए चुनौती देता है। चुनौती मिलते ही कतार में खड़े एक खेलाड़ी उनको छूने के लिए दौड़ाने लगता है। छूआ जाने के डर से चुनौती देने वाला खेलाड़ी भागने लगता है। एकल प्रयास से उनको छूने में जब सफलता नहीं मिलती है तो खेलाड़ी सम्मिलित प्रयास का रास्ता अपनाते हैं। सम्मिलित प्रयास में खेलाड़ी एक के बाद एक अपने सह-खेलाड़ियों की मदद से चुनौती देनेवाले खेलाड़ी को छूने का प्रयास करते हैं। इस प्रयास में खेलाड़ी त्वरित गति से अपने सह खेलाड़ी का स्थान ग्रहण करते हुए चुनौती देने वाले खेलाड़ी का पीछा करते हैं। अंत में चुनौती देनेवाला खेलाड़ी छू लिया जाता है।

पहले खेलाड़ी के छू लिये जाने पर दूसरा खेलाड़ी चुनौती देने के लिए मैदान में उतरता है। तब कतार में खड़े खेलाड़ी दूसरे खेलाड़ी को छूने के लिए पूरी तत्परता के साथ दौड़ाते हैं। थोड़ी देर के बाद वह भी छू लिया जाता है।

तब तीसरा खेलाड़ी चुनौती देने के लिए मैदान में उतरता है। कतार में खड़े खेलाड़ी तीसरे खेलाड़ी को भी दौड़ा दौड़ाकर छू लेते हैं। इस प्रकार चुनौती देनेवाले टीम के सभी खेलाड़ी थोड़े-थोड़े अंतराल में छू लिये जाते हैं। सभी खेलाड़ियों के छू लिये जाने पर खेल का प्रथमार्द्ध समाप्त हो जाता है।

खेल का प्रथमार्द्ध समाप्त होने के बाद खेला का द्वितीयार्द्ध प्रारम्भ होता है। खेल के द्वितीयार्द्ध में दूसरी टीम के खेलाड़ी मैदान में कतार बनाते हैं और पहले टीम के खेलाड़ी उनको चुनौती देते हैं। पहले टीम के खेलाड़ी एक एक कर कतार में खेड़े खेलाड़ियों को चुनौती देते हैं। कतार में खड़े खेलाड़ी उनको बारी-बारी से छूने का प्रयास करते हैं। एकल प्रयास में सफलता नहीं मिलने पर वे भी सम्मिलित प्रयास का रास्ता अख्तियार करते हैं। खेल के नियममों का अक्षरशः पालन करते हुए सम्मिलित प्रयास में अन्तत्वोगत्व चुनौती देनेवाले सभी खेलाड़ी छू लिये जाते हैं। सभी खेलाड़ियों के छू लिये जाने पर खेल का द्वितीयार्द्ध भी समाप्त हो जाता है।

जेटे हकव दुरङ

बरसात में जब बच्चे खेतों में गाय-बैलों को चराने जाते हैं तो पानी बरसने के कारण वे खेल नहीं पाते हैं। खेलने के लिए पानी रूकने का वे बेसब्री से इन्तजार करते हैं। बहुत देर तक इन्तजार करने पर भी जब पानी नहीं थमता है तो बच्चे विवश होकर बरसते पानी को बहुत दूर चले जाने के लिए कहते हैं और साथ ही धूप को पास आने के लिए आमंत्रित करते हैं -

जू दअःजू, टुङकु टुकुर ते,
देला जेटे देला, बड़े लंकाएःते।
डाढ़ि होरा रे पुंडि सिमले बोंगाइअ,
अम जिलु जिलुको, अले जङ जङको।
जू दअःजू, टुङकु टुकुर ते,
देला जेटे देला, बड़े लंकाएःते।

हसादअः की भांति नगुरी क्षेत्र में भी यह बाल गीत प्रचलित है किन्तु किंचित भिन्न रूप में। नगुरी में "टुङकु टुकुर" के समान पर "डुङकु डुकुर" का; "जेटे " के स्थान पर "सितुङ" का और "बड़े लंकाएः" के स्थान पर "मैना उम्बुल" शब्द का प्रयोग मिलता है। गीत के शेषांश में कोई भिन्नता नहीं है।

जू दअः जू डुङकु डुकुर ते,
देता सितुङ देला, मैना उम्बुल ते।
डाढ़ि होरा रे पुंडि सिमले बोंगाइअ,
अम जिलु जिलुको, अले जङ जङको।
जू दअः जू, डुङकु डुकुर ते
देता सितुङ देला, मैना उम्बुल ते।
(जा रे बरखा जा, तू बहुत दूर चला जा,
निकल जा धूप, निकल जा, मैंने की छांव में निकल जा।
पनघट में मुर्गी की बलि चढ़ायेंगे हम,
तुमको मांस का हिस्सा देंगे, हम हड्डी का हिस्सा लेंगे।
जा रे बरखा जा, तू बहुत दूर चला जा,
निकल जा धूप निकल जा, तू मैंने की छांव में निकल जा।

बच्चे धूप को आमंत्रित करने के इस बाल गीत को तब तक दोहराते रहते हैं जब तक बारिश थमने के बाद धूप नहीं निकल आता है।

इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड ए, पृ०सं० 50

अगमारिकोअः मोंतोर

गाय-बैलों को चराते समय जब कभी आकाश-मार्ग से जाते हुए सारस पक्षियों (अगामरी चेंड़ेको) के समूह पर बच्चों की नजर पड़ती है तो बच्चे उन पक्षियों को परेशान करने के लिए नीचे लिखे गीत गाते हैं। इस गीत का असर उन पक्षियों पर इस कदर पड़ता है कि देखते ही बनता है। एक प्रकार से यदि कहा जाय तो बच्चे इस गीत के द्वारा उन पक्षियों को बांध लेते हैं। जब तक बच्चे उनको आगे बढ़ने के लिए आदेश नहीं देते हैं तब तक पक्षियों का आगे बढ़ पाना नामुमकिन होता है। गीत इस प्रकार है –

सिद् पगा डुंडि पगा जिलिङेनपे, जिलिङेनपे।
सिद् पगा डुंडि पगा, बियुरेनपे, बियुरेनपे।
बुरू बोंगा, इकिर बोंगा, केसेद्कोम, केसेद्कोम,
बुरू बोंगा, इकिर बोंगा, अड़अःतकोम, अड़अःतकोम।
कटल पगहा, टूटल नगहा, तुम कतार बांधकर उड़ो,
तुम पंक्ति बांधकर उड़ो।
कटल पगहा, टूटल पगहा, तुम गोलाई बांधकर उड़ो,
तुम गोलाई बांधकर उड़ो।
हे बुरू बोंगा, हे इकिर बोंगा, तुम उनके रास्ते को रोक दो,
तुम उनके मार्ग को छेक दो।
हे बुरू बोंगा, हे इकिर बोंगा, तुम उनके रास्ते को खोल दो,
तुम उनके रास्ते को छोड़ दो।

इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड बी, पृ०सं० 564

बिर मिंडि हातु मिंडि इनुङ

यह बरसात में खेला जानेवाला हसादअः का एक व्यक्तिगत खेल है क्योंकि बिर मिंडि घास के बीज बरसात में ही मिलते हैं। इस खेल में खेलाड़ी अपने-अपने हाथों या पत्तों में "बिर मिंडि" घास के बीजों को लेकर यों गाते हैं -

"बिरमिंडि हातुमिंडि,
डोरबेद् - डोरबेद्।"

हे वन के डोर-हे गोहार के डोर
तू लौट आ, तू लौट आ।

नगुरी क्षेत्र में खेलाड़ी बिरमिंडि घास के बीजों को हथेली या बंदु के पत्तों में लेकर इस प्रकार गाते हैं -

गुरगुर रे दोना मिंजो,
गुरगुर रे दोना मिंजो,

गुर गुराते हुए घूमो रे बीज,
गुर गुराते हुए घूमो रे बीज।

इस खेल का संबंध केवल मन बहलाव से है हार जीत से इसका कोई संबंध नहीं है। हथेली या पत्तों में लेकर बिरमिंडि के बीज गीत के साथ ही गतिशील होने लगते हैं। गतिशील बिरमिंडि घास के बीजों को देखकर ही खेलाड़ी आनन्द का अनुभव करते हैं।

इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड डी, पृ०सं० 1112

दुंदुकेल इनुङ

यह बच्चों का खेल है इसके सभी प्रतिभागी बच्चे होते हैं। इस खेल में बच्चे एक दूसरे का हाथ थामें एक घेरा(circle) बनाते हैं। उस घेरे के अंदर एक प्रतिभगी मुर्गे की भूमिका में रहता है और दूसरा प्रतिभागी सियार की भूमिका में घेरे के बाहर रहता है। बच्चे सियार से मुर्गे को बचाने के लिए हाथ थामें दौड़ते हुए चक्र लगाते हैं और वे गीत गाते हुए बार-बार सियार से निवेदन करते हैं -

सिम पोटातेम हिसिराकना;
अलोम तुइयु जोमिइअ,
मियद् गेआए: तले संडिसिम।
(मुर्गे की आंत धरते हो तुम;
ओह सियार ! इसे मत हर लेना,
यही अकेला हमारा मुर्गा है।)

सियार की भूमिका निभानेवाला प्रतिभागी भी मुर्गा पकड़ने के लिए वृत्त के चारों ओर चक्र काटता है। वह हमेशा घेरा तोड़कर मुर्गा पकड़ने की कोशिश करता है। बच्चे पूरी मुस्तैदी से मुर्गे को बचाने में लगे रहते हैं। उस पर भी यदि सियार मुर्गे को पकड़ लेता है तो खेल पुन: नये सिरे से आरम्भ होता है। दूसरे प्रतिभागी मुर्गा और सियार की भूमिका में उतरते हैं। यही क्रम चलते रहता है।

पुन: बच्चे एक वृत्त बनाते हैं उस वृत्त के अंदर पूर्ववत एक प्रतिभगी मुर्गे की भूमिका में रहता है और दूसरा सियार की भूमिका में वृत्त के बाहर रहता है। बच्चे सियार से मुर्गे को बचाने के लिए हाथ थामें दौड़ते हुए चक्र लगाते हैं और वे गीत गाते हुए बार बार सियार से निवेदन करते हैं -

सिम पोटातेम हिसिराकना
अलोम तुइयु जोमिइअ,
मियद् गेआए: तले संडि सिम।
(मुर्गे की आंत धरते हो तुम;
ओह सियार ! इसे हर मत लेना,
यही अकेला हमारा मुर्गा है।

इसी तरह खेल का क्रम चलते रहता है और मुर्गे की भूमिका में जो प्रतिभागी रहता है सियार के द्वारा पकड़े जाने के कारण वह खेल से बाहर हो जाता है।

आमको जामको इनुङ

यह बच्चों का खेल है। बच्चे ही इस खेल के प्रतिभागी होते हैं। इस खेल में प्रतिभागियों की कोई निश्चित संख्या नहीं रहती है। जितने प्रतिभागी जमा होते हैं उतने ही प्रतिभागियों से खेल आरम्भ होता है। इस खेल में सभी प्रतिभागी एक जगह गोलाई बनाकर बैठते हैं और सभी प्रतिभागी अपनी हथेली जमीन की सताह से सटाकर रखते हैं। तब उनमें से एक प्रतिभागी "आमको जामको" गीत के एक-एक शब्द को उच्चारित करते हुए प्रत्येक की हथेली को बारी-बारी से स्पर्श करता है। जिसकी हथेली पर गीत खत्म होता है वह वहीं पर "थुपि" कहता है। जिसकी हथेली को छूकर "थुपि" कहता है वह प्रतिभागी खेल से बाहर हो जाता है।

तब दूसरा प्रतिभागी "आमको-जामको"गीत के एक-एक शब्द को पुनः उच्चारित करते हुए बाकी बचे प्रतिभागियों की हथेली बारी-बारी से स्पर्श करता है। यह प्रतिभागी भी जिसकी हथेली को छूते हुए गीत के अंतिम शब्द को उच्चारित करता है वहीं पर वह "थुपि" कहता है। इस तरह से एक अन्य प्रतिभागी खेल से बाहर हो जाता है।

पुनः तीसरा प्रतिभागी "आमको-जामको" गीत के एक-एक शब्द को उच्चारित करते हुए बाकी बचे प्रतिभागियों की हथेली को बारी-बारी से छूता है और जिसकी हथेली पर गीत खत्म करता है वह वहीं पर "थुपि" कहता है। "थूपि" कह देने से संबंधित प्रतिभागी भी खेल से बाहर हो जाता है।

इस खेल में यही क्रम चलते रहता है और एक-एककर प्रतिभागी खेल से बाहर होते जाते हैं। अंत में केवल एक ही प्रतिभागी शेष रह जाता है। इस खेल में प्रतिभागी बारी-बारी से खेलते हुए जो गीत गाते हैं वह इस प्रकार है -

आमको जामको	(हम भी हैं भाई, तुम भी हो भाई,
तिति रिम्बिड़ि	तुम्हारे हाथों में,
जुड़ा पान	जोड़ा भर पान है
रूनझुन के	रूनझुन करता हुआ
पांइड़ा बजे	तेरे पैरों में पायल
जानर-जुनुर	जानर-जुनुर बज रहा है
डेकलाइ के अइरि बइरि	ढकेल दी हयरे, मेरी बैरी,
बुरसि रे गेलाई लम्बर	बोरसी में, ओह दस नम्बरी
थुपि।	थुपि।)

कड़ाकोमकोअः मोंतोर

बरसात के दिनों में बच्चे खेतों में केंकड़ा पकड़ने के लिए निकल पड़ते हैं। केंकड़ा पकड़ते वक्त कभी-कभी बच्चों की ऊँगली केंकड़े के धारदार पंजों में चली जाती है। केंकड़े अपने पंजों से इतनी जबर्दस्त काटते हैं कि उससे ऊँगली छुड़ा पाना बहुत मुश्किल होता है। केंकड़ों का काटना बहुत ही पीड़ादायक होता है। केंकड़े के काटने पर गाँव में बच्चे नीचे लिखे बाल मंत्र का उच्चारण करते हैं। इस मंत्र का उच्चारण करते साथ केंकड़ा अपनी पकड़ से ऊँगली को मुक्त कर देता है। बच्चे इस मंत्र को तब तक उच्चारित करते हैं जब तक केंकड़ा उन्हें छोड़ नहीं देता है। मंत्र का रूप इस प्रकार है -

इःइ कोः अइञ्।
इःइ कोः अइञ्।
इःइ कोः अइञ्
इःइ कोः अइञ्

(मुझे मल त्यागने दो।
मुझे मल त्यागने दो।
मुझे मल त्यागने दो।
मुझे मल त्यागने दो।)

यह बहुत ही अचूक बाल मंत्र है। इस मंत्र से गाँव का बच्चा बच्चा वाकिफ है। वह बहुत ही साधारण मंत्र है लेकिन इस मंत्र में असाधारण शक्ति है। बच्चे तो क्या बड़े भी इस मंत्र की शक्ति को अजमाते हैं। इस मंत्र में आज भी वही शक्ति है जो शक्ति पहले थी। मंत्र की पहली पंक्ति उच्चारित करते ही इसका असर केंकड़े पर दिखने लगता है। दूसरी, तीसरी और चौथी पंक्ति उच्चारित करने तक तो केंकड़े का वार पूर्णतया बेअसर हो जाता है।

लेकिन इस मंत्र का गलत जाप करने पर इसका प्रतिकूल असर भी पड़ सकता है। इसलिए जब भी मंत्र का जाप करें तो सही सही करें अन्यथा मंत्र सिद्ध नहीं होगा।

अदाए अदाए चिगुड़ि इनुङ

इस खेल में बच्चों की दो टीमें हिस्सा लेती हैं। एक टीम के सदस्य एक वृत्त बनाकर तीन-तीन फीट की दूरी पर बैठते हैं और दूसरी टीम के सदस्य इस वृत्त के अंदर घुसने के प्रयास में चारों ओर चक्कर लगाते हैं। वृत्त के अंदर घुसने का प्रयास करने वाले टीम के सदस्यों को वगैर छुआए भीतर घुसना पड़ता है। अगर कोई छुआ जाता है तो वह खेल से बाहर हो जाता है। यदि कोई बिना छुआए वृत्त के अंदर घुसने में सफल हो जाता है तो उसके टीम के बाकी सदस्य भी बिना छुआए वृत्त के अंदर घुसते हैं। वृत्त के अंदर घुसने के बाद उनको पुनः बिना छुआए बाहर निकलना पड़ता है। यदि सभी सदस्य भीतर से बाहर निकलने में (वगैर छुआए) सफल हो जाते हैं तो वे खेल जीत जाते हैं। मगर भीतर से बाहर निकलते समय टीम का कोई सदस्य छुआ जाता है तो जीत हार में बदल जाती है।

खेल हार जाने पर हारी हुई टीम के सदस्य पुनः एक वृत्त बनाकर बैठते हैं। प्रत्येक सदस्यों के बैठने का फासला वही पूर्ववत तीन-तीन फीट की दूरी होती है। जीती हुई टीम के सदस्य इस वृत्त के अंदर घुसने के प्रयास में चारों ओर चक्कर काटते हैं। वृत्त के अंदर घुसने वाले टीम के सदस्य इस तरह गाते हैं -

अदाए अदाए चिगुड़ि चिगुड़ि
राई बा दो मांगड़ा-मुंगुडु मांगड़ा-मुंगुडु ।
(जान ले भाई जान ले, लम्बे लम्बे बहिगों को बहिगों को,
चिन ले भाई चिन ले, सरसों फूल जैसे चंचल चित्त वालों को वालों को)

वृत्त के अंदर घुसने के क्रम में यदि टीम का कोई सदस्या छू लिया जाता है तो वह खेल से बाहर हो जाता है। इसलिए टीम के सदस्यों को बिना छूआए बड़ी सावधानी के साथ वृत्त के अंदर घुसना पड़ता है। वृत्त के अंदर से बिना छूआए बाहर निकलना पड़ता है। यदि भीतर से बाहर निकलते समय टीम का कोई सदस्या छू लिया जाता है तो टीम खेल हार जाती है।

इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड ए, पृ०सं० 29

हड़द् मुई: कोअ: मोंतोर

गाँवों में बच्चे गाय-बैलों को चराने के लिए बाहर खेतों में प्रतिदिन जाते हैं। गाय-बैलों को चराने के क्रम में कभी-कभी लोहा चींटी (हड़द् मुई:) उनके पैरों तले आ जाती है। लोहा चींटी इतनी जोर से काटती है कि इसका दर्द देर तक रहता है। इसलिए बच्चे बड़ी सावधानी के साथ खेतों में चलते-फिरते हैं सावधानी बरतने के बावजूद लोहा चींटी कभी-कभी उनके पैरों तले आ ही जाती है। तब बच्चे उनके काटने से बचने के लिए पैर हटाने के बजाय नीचे लिखे बाल मंत्र को उच्चारित करते हैं।

अइञअ: कटा हड़ादा,
सदोम कटा सिबिला।
अइञअ: कटा हड़ादा,
सदोम कटा सिबिला।

(मेरा पैर तीता है,
घोड़े का पैर मीठा है।
मेरा पैर तीता है,
घोड़े का पैर मीठा है।)

कहीं कहीं पर "अइञअ: कटा" के बदले "होड़ो कटा" शब्द का उच्चारण भी मिलता है। यथा -

होड़ो कटा हड़ादा,
सदोम कटा सिबिला।
होड़ो कटा हड़ादा
सदोम कटा सिबिला।

आदमी का पैर तीता है,
घोड़े का पैर मीठा है।
आदमी का पैर तीता है,
घोड़े का पैर मीठा है।

इस बाल-मंत्र का उच्चारण बच्चे तब तक करते हैं जब तक सारी चींटियाँ उनके पैरों से उतर नहीं जाती हैं। इस बाल मंत्र का असर इतना अधिक है कि चींटियाँ सारे शरीर पर चढ़ जायेंगी, पर कभी नहीं काटेंगी। आज भी इस बाल मंत्र का असर पूर्ववत् कायम है। पर ध्यान रहे बाल मंत्र की पंक्तियों का गलत उच्चारण न हो अन्यथा प्रतिकूल परिणाम हो सकता है।

बिद्-दिरि काति-दिरि इनुङ

इस खेल के सभी प्रतिभागी बच्चे होते हैं। सभी प्रतिभागी एक सीधी लाइन में पर्याप्त दूरी बनाकर एक दूसरे का हाथ थामे खड़े रहते हैं। पहला प्रतिभागी इस तरह गाते हुए खेल आरम्भ करता है -

"मद्को बितर रगड़ा-पगड़ा, काएथा दो जोलेन, जोलेन ।। 2 ।।"
(बांस के झुरमुट में रगड़-पगड़, कएथा जो फला था, काएथा जो फला था ।। 2 ।।

उसी तरह गाते हुए वह अपने निकट खड़े प्रतिभागी के साथ बनाये गए चापनुमा बाहों की आकृत्ति के नीचे से पार होता है। उसके बाद वह दूसरे प्रतिभागी द्वारा बनाये हुए चापनुमा बाहों की आकृत्ति के नीचे घुसता है। तत्पश्चात् दूसरा प्रतिभागी गाते हुए उसका पीछा करता है। दूसरा प्रतिभागी जैसे ही अपने निकट खड़े प्रतिभागी की चापनुमा बाहों की आकृत्ति के नीचे पार होता है वैसे ही तीसरा प्रतिभागी उसका पीछा करता है। इसी तरह सभी प्रतिभाग एक दूसरे का पीछा करते हुए अंतिम प्रतिभागी तक पहुँचते हैं। अंतिम प्रतिभागी तक पहुँचकर सभी प्रतिभागी समावेत्त स्वर में बड़े हर्ष के साथ चिल्लाते हैं - "छुर रे"। "छुर रे" की हर्ष ध्वनि के साथ ही खेल का प्रथमार्द्ध समाप्त हो जाता है।

तब खेल का द्वितीयार्द्धा शुरू होता है। सभी प्रतिभागी पुनः एक सीधी लाइन बनाकर पूर्ववत खड़े हो जाते हैं। खड़े हो जाने के बाद खेल का समारम्भ दूसरी छोर से होता है। दूसरी छोर में खड़ा अंतिम प्रतिभगी पहले के गीत की पुनरावृत्ति नहीं करता है बल्कि एक दूसरी गीत इस तरह गाता है -

"बुरू कुला रअःकेद्, सेकेरेः को लिड़ुकेद् ।। 2 ।।"
(पहाड़ी शेर ने धाहड़ा, सेकेरेः की डालियाँ झुक गईं ।। 2 ।।)

इसी गीत को गाते हुए सभी प्रतिभागी पूर्ववत एक दूसरे का पीछा करते हुए अंतिम प्रतिभागी तक पहुँचते हैं। अंतिम प्रतिभागी तक पहुँचकर पुनः सभी प्रतिभागी समावेत्त स्वर में हर्ष के साथ चिल्लाते हैं - "छुर रे"। "छुर रे" की हर्ष ध्वनि के साथ खेल का द्वितीयार्द्ध भी समाप्त हो जाता है।

---

1. इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड बी, पृ०सं० 537
2. इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड - आर, पृ०सं० 3480

मुई:को सकिङ इनुङ

यह बच्चों का एक खेल है। इस खेल में खेलाड़ी दो कतार में एक दूसरे के आमने-सामने खड़े रहते हैं। एक कतार में खड़े खेलाड़ी अपने सामने खड़े खेलाड़ी का हाथ थामें रहते हैं। सभी खेलाड़ी ताली बजाते हुए इस तरह गाते हैं -

मुई:को सकिङ मुई:को,
इचअ: लेको तुडु लेको,
मालि हातु डिंम्बु सकिङ,
केवरा - केवरा।
(ओ चींटी, ओ मेरे मीते, ओ चींटी,
तुम क्यों काटती हो, तुम क्यों डांसती हो,
अपने पुराने गाँव में, ओ मीते डिम्बु
ओ मीते, केवरा में, केवरा में।)

जब खेलाड़ी गीत गा रहे होते हैं उसी समय दो खेलाड़ी (प्रत्येक कतार से एक-एक खिलाड़ी) परस्पर हाथ थामे एक दूसरे का अनुशरण करते हुए, खेलाड़ियों के उठाये हुए हाथों के नीचे से पार होते हैं और ये जैसे ही पार हो जाते हैं वे पुन: ये भी कतार के अंतिम छोर में पूर्ववत्त एक दूसरे का हाथ थामें हुए खड़े हो जाते हैं। इसी तरह दूसरे, तीसरे खेलाड़ी परस्पर हाथ थामें आगे बढ़ते जाते हैं और खड़े हो जाते हैं। यही क्रम चलते रहता है।

हेड़े बा इनुङ

यह बच्चों का एक खेल है। इस खेल को "सिसि डुंगुरि इनुङ" भी कहा जाता है। इस खेल में खेलाड़ी एक कतार में या एक गोलाई बनाकर बैठते हैं। सभी खेलाड़ी एक दूसरे का हाथ थामें रहते हैं। उन्हीं खेलाड़ियों में से एक खेलाड़ी कतार के एक छोर से दूसरे छोर तक या गोलाई के चारों ओर दौड़ते हुए इस गीत को गाता है –

हेड़े बा तेइञ् बान तन
हुंदि बा तेइञ् बान तन
सिसि डुंगुरि मामा डुंगुरि
बेंगड़ा बेंगड़ा चुरबेद् चुरबेद्।

(हेड़े के फूलों से मैं सजी हूँ,
हुंदि के फूलों से मैं लदी हूँ
सिसि के टीले से, मनि के टीले से
बैंगन के तले, मैं तुझे बुला रही हूँ।

गीत गानेवाले खेलाड़ी के पास गांठ बांधा हुआ कपड़े का एक टुकड़ा रहता है। जिसे वह बैठे हुए खेलाड़ियों के पास चुपचाप गिराकर भाग जाता है। जैसे ही बैठे हुए खेलाड़ी को यह आभास हो जाता है कि कपड़े का टुकड़ा उसके बगल में गिरा हुआ है। वह उसे लेकर अगले खेलाड़ी को छूने का प्रयास करता है। इसके लिए वह पूरी जोर से दौड़ लगाता है। लेकिन छुआने से पहले ही यदि वह बैठ जाता है तो वह बच जाता है। अगले को नहीं छू सकने पर वह किसी अन्य खेलाड़ी के पास कपड़े का टुकड़ा गिरा देता है और वह भी उसे छुआने से बचने का प्रयास करता है। संयोगवश यदि कोई छुआ जाता है तो वह खेल से बाहर हो जाता है।

इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, खण्ड एच, पृ०सं० 1720

अलोम हाउ हुअ:इगा,
अमअ: होनकोइग् जुटियामा ।
अलोम हाउ हुअ:इगा,
अमअ: होनकोइग् जुटियामा ।

ओ देमता ! मुझे मत काटना,
मैं तुम्हारे बच्चों को खेलाऊँगा ।
ओ देमता ! मुझे मत काटना,
मैं तुम्हारे बच्चों को खेलाऊँगा ।